।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

समाचार-पत्र

ई-पेपर

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 जून+जुलाई 2025 | वर्ष 18 अंक 03-04

कुल पृष्ठ - 43 | वार्षिक शुल्क : ₹ 200/- (भारतवर्ष में), ₹ 2000/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 20/-

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

सब जीवों को परलोक के मार्ग में काम आने वाला सामान अभी से ही लेना चाहिये। सामान वह खरीदना चाहिये जो कभी भी पुराना न हो, न ही बेचने पर घाटा पड़े। ऐसा सामान जाँचकर खरीद लेने पर तुम्हें परलोक में काम आएगा। वहाँ तुम्हें बहुत सुख मिलेगा। इस विषय पर व्याख्या कर सत्नाम साक्षी की धुनी लगा कर सत्संग समाप्त किया।

दूसरे दिन सायं को खाही गाँव के पंचों द्वारा भेजे गये भाई वाटूराम जी ने चक गाँव में आकर गुरु महाराज जी को अपने खाही गाँव में चलने के लिये प्रार्थना की। यह सुन कर गुरु महाराज जी कहने लगे कि प्यारा! हमें यहाँ एक सप्ताह और भी लग जायेगा। यह सुन कर भाई जशनराम जी सहसा यह बोल उठे कि हे प्रभो! आपके भोजन की व्यवस्था तो पंद्रह दिनों तक प्रेमियों के यहाँ पहले से ही हो चुकी है। प्रेमी लोग पहले से ही मना गये हैं। इसलिए आप कृपा कर भगत वाटूराम जी को कोई निश्चित तिथि न बतायें। वाटूराम जी भी बड़े अच्छे भगत हैं, ये भी भली कुछ दिन यहाँ पर रहें, फिर देखा जायेगा।

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का 139वां जन्मोत्सव 30 जून 2025

यह सुन कर गुरु महाराज जी प्रेमियों के साथ बगीचों की सैर को चले गये। वहाँ पर वाग्विलास करते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि चित्त रूपी एक बालक है और उसके प्रसन्न रखने के लिए संसार में चार प्रधान स्थान हैं- (१) दरिया का किनारा (२) फूलों का बगीचा (३) हरे-भरे पहाड़ और (४) सत्संग। दरिया, बगीचों व पहाड़ों पर जब तक टहलते रहेंगे तब तक प्रसन्नता महसूस होती रहेगी, वहाँ से दूर होते ही प्रसन्नता का अभाव हो जायेगा। परन्तु जो लोग चित्त रूपी बालक को सत्संग रूपी पालने में बिठा कर झुलाते हैं और राम नाम रूपी दूध पिलाते हैं, और वेदान्त वचनों के खिलौने देकर शान्त कराते हैं, उन लोगों का चित्त रूपी बालक स्वस्वरूप में मग्न होकर अखण्ड आनन्द के हिंडोले में झूलता रहता है। इस प्रकार की ज्ञान-चर्चाएँ कर घूम-फिरकर वापस आये।

रात के सत्संग का आरम्भ भगत वाटूराम जी ने किया। जिसकी मनमोहक आवाज ने सत्संगियों को मोहित कर लिया। फिर गुरु महाराज जी वेदान्त के विषय पर बोलते हुए कहने लगे कि इस जीव का वस्तुतः स्वरूप सत्, चित्, आनन्द है। ये तीनों गुण जीवात्मा में दिखलाई पड़ते हैं। भूतकाल माने जो बीत गया हो, वर्तमान माने जो चल रहा हो,

शेष पेज नं. 2 पर...

पेज नं. 1 से आगे...

भविष्यत्काल माने जो आने वाला हो। इन तीनों कालों में जिस का अभाव न हो, नाश न हो, उसे विद्वान लोग ''सत्'' ऐसा कहते हैं। जिसके प्रकाश का कभी भी अभाव न हो, सुविज्ञ लोग उसे ''चित्'' ऐसा कहते हैं। इस सत् व प्रकाश के आधार सत्ता को पाकर स्थूल, सूक्ष्म व कारण ये तीनों शरीर स्थित होकर अपना-अपना व्यवहार करते हैं। इस सत् व प्रकाश को पाकर ये पूरा ब्रह्माण्ड स्थिर होकर खड़ा है और जिस के बल पर गगन-मण्डल में सूरज, चाँद, सितारे चमक कर शोभायमान हो रहे हैं। समस्त पदार्थों में से जो कुछ आनन्द आ रहा है वह सब सत् का ही प्रताप है।

उदाहरण के लिए, लड़के को ही ले लीजिए। लोग कहते हैं कि लड़के में आनन्द है, परन्तु वहाँ पर बिल्कुल ही आनन्द नहीं है। जैसे किसी सेठ का इकलौता लड़का अपने माँ-बाप से विदा होकर पढ़ाई के लिए विदेश को जाता है। दस वर्ष तक पढ़ाई कर, प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर, फिर अपने माता-पिता को चिट्ठी द्वारा सूचना देता है कि मैंने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली है, अब अमुक तिथि को यहाँ से सवेरे छः बजे वाले वायुयान द्वारा प्रस्थान करूँगा, फिर मार्ग के बड़े-बड़े नगरों की यात्रा करता हुआ अमुक तिथि को रात को बारह बजे वाली गाड़ी के द्वारा आपके पास पहुँच जाऊँगा। लड़के के आने की पत्रिका पढ़कर सेठ जी बहुत प्रसन्न होकर ये समाचार अपनी पत्नी को जाकर सुनाता है।

घड़ी-घड़ी चिट्ठी पढ़ता है और प्रसन्नता के मारे फूला नहीं समाता है, यह समाचार अपने सम्बन्धियों को भी सुनाता है, दिन गिनता रहता है। उसके लिए ये दिन भी साल बन जाते हैं। आखिर वह दिन भी आता है, जिस दिन का उसे इन्तजार था। इन्तजार की घड़ियाँ बहुत लम्बी होती हैं। वह दिन भी उसको एक वर्ष के समान मालूम होने लगता है। संसार का सब कार्य व्यवहार भूल जाता है। किसी भी पदार्थ में से उसे आनन्द नहीं मिलता। समस्त चित्तवृत्तियाँ लड़के में ही लगी रहती हैं। क्षण-क्षण में घड़ी को देखता है, घण्टे गिनता है. प्रतीक्षा करते रात के दस बज जाते हैं। जब पत्नी कहती है कि अब भोजन पाकर तैयार होकर कार लेकर स्टेशन पर जाओ और लड़के को ले आओ। तब सेठ जी कहता है कि लड़के को ले आऊँ तो फिर लड़के के साथ-साथ भोजन करूँगा। क्योंकि मुझे अभी भूख नहीं है। आप भली भोजन पालो। परन्तु पत्नी भी कहती है कि मुझे भी भूख नहीं है। भला भूख क्यों नहीं लगी थी? कारण स्पष्ट है। लड़के के देखने की प्यास से पेट भर गया था। भूख है तो एक लड़के को ही देखने की है।

आखिर सेठजी ग्यारह बजे कार लेकर स्टेशन पर जाता है। कार को बाहर छोड़ कर सेठ जी प्लेटफार्म पर जाता है। घड़ी हाथ में रख कर गाड़ी को देखता रहता है। उस समय का एक क्षण भी एक मास के समान मालूम पड़ता है। आखिर गाड़ी के आने की घण्टी बजती है, सिग्नल नीचे गिर कर गाड़ी के आने की सूचना देता है। सेठ जी को एक गाड़ी के सिवा और कुछ भी नजर नहीं आता। दिल में आनन्द की लहरें उठ रही हैं। गाड़ी आकर स्टेशन पर खड़ी हो जाती है। लड़के को डिब्बे से उतरते देख कर सेठ लड़के के पास जाता है। हृदय आनन्द से भर जाता है। फिर जब लड़के को गले से लगाता है, तब वह आनन्द हृदय में न समा कर प्रेमाश्रु बन कर आँखों द्वारा बाहर निकल पड़ता है। प्रेमपुलक होकर कण्ठ रुक जाता है। उस समय के आनन्द के अनुभव को केवल सेठ ही जानता है। फिर कार में बिठा कर लड़के को घर ले आता है। फिर भोजन पा कर सो जाते हैं। सवेरा होते ही वह आनन्द घटने लगता है। आठ दिन बीतने पर लड़के से वह आनन्द नहीं मिलता। दैवयोग से एक मास बीतने पर लड़के से कुछ ऐसी गलती हो जाती है जिस कारण सेठ जी बहुत गुस्से होकर कह देता है, अरे मूर्ख ! आपने यह क्या कर डाला । लड़के को बहुत डांटता है व कटु वचन भी बोलता है । अगर लड़के में आनन्द होता तो सेठ जी को वह स्टेशन वाला आनन्द सदैव आता । इससे स्पष्ट है कि लड़के में आनन्द बिल्कुल ही नहीं है । वह आनन्द तो इस जीव का ही स्वरूप है । परन्तु यह जीव अपने स्वरूप को भूल गया है । फिर सत्संग में जाकर महात्माओं व शास्त्रों के वेदान्त वचन सुनकर पूर्ण सद्गुरु की कृपा से आत्मज्ञान पाकर अपने स्वरूप को पहचान कर संसार में जीवन मुक्त होकर विचरता है ।

गुरु महाराज जी का भजनों सहित व्याख्यान सुनकर सारी सभा आनन्द विभोर हो रही थी । सारी सभा में महा आनन्द छा रहा था । सत्संग समाप्त होने पर भाई जशनराम जी ने प्रार्थना कर कहा कि सब प्रेमियों की इच्छा है कि प्रातः को भी सात से नौ बजे तक सत्संग का कार्यक्रम हो तो बहुत अच्छा ! इस पर गुरु महाराज जी ने स्वीकृति प्रदान की फिर भोजन पा कर विश्रामी हुए ।

शेष अगले अंक में...

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 जून+जुलाई 2025

वर्ष 18 | अंक 3-4

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्त्रोत
सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 200	₹ 2000
दो वर्ष के लिये	₹ 400	₹ 4000

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर-474001 (मध्यप्रदेश)
फोन 0751-4045144
सम्पर्क समय : प्रात 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751-4045144 पर अथवा व्हाटस् एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरु धाम श्री अमरापुर दरबार (डिंबु), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार-शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

संत रूप धर स्वयं जगत में ब्रह्म हुए साकार

सांई टेऊँराम मंगल अवतरण

जब जब होय धर्म की हानी त्राहि त्राहि की मचे पुकार
धर्म की रक्षा हेतु प्रभू धरती पर आते ले अवतार
पावन सिन्धू सुरम्य वनों उपवनों में था सुन्दर ग्राम
खण्डू नामक इसी गाँव में हुए अवतरित टेऊँराम
पिता संत सेवी फूलवंशी क्षत्रिय थे चेलाराम
माता कृष्णा ने प्रभु को माँगा पुत्र रूप में जैसे राम
अच्युत रूप प्रभु विहँसे माता कृष्णा की गोद भरी
झूम उठा आकाश धरा पर चहुँ ओर सुगंध बिखरी
आषाढ़ शुक्ल षष्ठी तिथि को कृष्णा ने पुत्र रत्न पाया
पुष्पों ने सजाई रंगोली चिड़ियों ने मंगल गान गाया
वरुण देव के मित्र थे टेऊँ धीर गम्भीर मानों आकाश
अगणित सूर्यों का तेज समेटे लेकर आए प्रखर प्रकाश
भक्त जनों के कष्ट हरे शरणागत का उद्धार किया
जन जन को मन की शुद्धि हेतु 'सत्नाम साक्षी' सा मंत्र दिया

अनुक्रमणिका

अनुक्रम	विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी	1–2
02.	सांई टेऊँराम बाबा जन्मोत्सव पर राजनेताओं द्वारा भेजे गए शुभकामना सन्देश	4–5
03.	मंगलमूर्ति आचार्य टेऊँराम बाबा का संक्षिप्त जीवन दर्शन	6–8
04.	सद्गुरु टेऊँराम जयंती पर विशेष पावन प्रसंग	9–10
05.	सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की गुण महिमा के पावन प्रसंग	11–12
06.	आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का 139वां जन्मोत्सव समाचार	13–21
07.	आचार्य श्री के 139वें जन्मोत्सव की चित्रमय झलकियां	22–28
08.	सद्गुरु टेऊँराम छठी भजन	29
09.	गुरु पूर्णिमा विशेष	30
10.	गुरु पूर्णिमा महोत्सव सआनन्द सम्पन्न समाचार	31
11.	गुरुपूर्णिमा पर राज.विधानसभा स्पीकर ने लिया पूज्य महाराजश्री से आशीर्वाद	32
12.	गुरुपूर्णिमा पर विशेष प्रेरणादायक प्रसंग, सावन मास – पावन प्रसंग	33
13.	संत वचन-गुरु की महिमा गुरु ही जाने (प्रेरणादायक कहानी)	34
14.	सच्ची तीर्थ यात्रा, गुरु और भगवान में एक अन्तर है	35–36
15.	सत्संग का हमारे जीवन में क्या फर्क पड़ता है ?	37
16.	आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का वर्सी महोत्सव सम्पन्न समाचार	38
17.	समाचार डायरी	39
18.	भजन- चालीहा बाबा टेऊँराम का (श्री हरकेश वधवा)	40
19.	अमरापुर गमन	41–42
20.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	42
21.	व्रत – पर्व – उत्सव + सूचना,	42
22.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	43

युगपुरुष आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जयंती (जन्मोत्सव) पर

शुभकामना संदेश

अध्यक्ष, लोक सभा
SPEAKER, LOK SABHA
INDIA

सिन्ध-हिन्द के महान कर्मयोगी, जन-कल्याण और आत्मकल्याण के प्रतीक, युगपुरुष आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के 139वें प्रकटोत्सव पर मैं अपनी ओर से श्रद्धापूर्ण वंदन अर्पित करता हूँ।

महाराज श्री का जीवन तप, त्याग, सेवा और अध्यात्म का विलक्षण उदाहरण है। उन्होंने प्रेम प्रकाश मंडल के माध्यम से मानवता, राष्ट्रीय चेतना और संत परंपरा को एक नई दिशा दी। 139वें प्राकट्योत्सव को सम्पूर्ण विश्व में श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक भावनाओं से मनाया जाना, यह स्वयं में उनके विचारों की व्यापकता और प्रासंगिकता का प्रमाण है।

उनकी शिक्षाएँ आज भी समाज को प्रेरणा दे रही हैं, चाहे वह आत्मोत्थान हो, नारी सशक्तिकरण, नशामुक्ति या राष्ट्र निर्माण की भावना।

मैं कामना करता हूँ कि उनका यह प्रकटोत्सव समस्त भक्तों, श्रद्धालुओं और मानव समाज के लिए आध्यात्मिक ऊर्जा, सामाजिक जागरूकता और शांति का प्रेरक अवसर बने।

पावन जयन्ती महोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ।
"जय स्वामी टेऊँराम महाराज जी !"

(ओम बिरला)

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के 139वें जन्मोत्सव पर माननीय श्री हरिभाऊ बागडे (राज्यपाल, राजस्थान) द्वारा शुभकामना संदेश

हरिभाऊ बागडे
राज्यपाल, राजस्थान

Haribhau Bagde
Governor, Rajasthan

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज श्री अमरापुर स्थान द्वारा सिन्ध-हिन्द के महान कर्मयोगी संत प्रेम प्रकाश मण्डल के पुरोधा संस्थापक सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का 139वां प्रकटोत्सव 26 जून से 30 जून 2025 तक विश्वभर में मनाया जा रहा है।

युगपुरुष आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी का जीवन संत परम्परा में जीव दया के रूप में आदर्श का अप्रतिम उदाहरण है। मानव मात्र ही नहीं पशु-पक्षियों, जीव-जन्तुओं के प्रति भी उनकी करूणा, प्यार और सद्भाव प्रेरणा देने वाला है। भारतीय संत परम्परा में उनका अलौकिक व्यक्तित्व सनातन मूल्यों को सींचने वाला ही नहीं रहा बल्कि जो ग्रंथ उन्होंने लिखे वे भी हमारी संस्कृति की अनुपम धरोहर है।

ऐसे महान संत तपस्वी को मेरी श्रद्धा अर्पित है । उनका वंदन, अभिनंदन ।
हार्दिक शुभकामनाएं हैं ।

(हरिभाऊ बागडे)

राज भवन, सिविल लाइन्स, जयपुर-302006
Raj Bhawan, Civil Lines, Jaipur-302006
दूरभाष : 0141-2228716-19, 2228611-12, 2228722

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जयंती (जन्मोत्सव) पर माननीय श्री भजनलाल शर्मा (मुख्यमंत्री, राजस्थान) द्वारा शुभकामना संदेश

शुभकामना संदेश

मुख्यमंत्री
राजस्थान

परम पूज्य, योगी, साधक एवं जनकल्याण के प्रेरणा स्त्रोत श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज के १३९वें प्राकट्योत्सव के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूं।

उनका जीवन तप, त्याग, सेवा और आध्यात्मिक उन्नति की प्रेरणास्पद यात्रा रहा है। स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने संत परंपरा की अमूल्य विरासत को जन-जन तक पहुँचाया और "प्रेमप्रकाश पंथ" के माध्यम से समाज में नैतिक मूल्यों, शांति और भाईचारे की भावना को पुष्ट किया।

"श्री प्रेमप्रकाश पंथ" के माध्यम से उन्होंने शिक्षा, सेवा, आध्यात्मिक साधना एवं साहित्य के क्षेत्र में जो अमिट छाप छोड़ी है, वह आने वाली पीढ़ियों को सदा मार्गदर्शन देती रहेगी। "श्री अमरापुर स्थान" एवं "श्री प्रेम प्रकाश आश्रम" जैसे दिव्य धाम आज भी हजारों श्रद्धालुओं को आत्मिक शांति व प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं।

उनकी पावन स्मृति में आयोजित यह महोत्सव न केवल श्रद्धा का प्रतीक है, अपितु हमारे जीवन को संस्कारित करने का माध्यम भी है। यह पर्व हम सभी को आपके द्वारा दिखाए गए प्रेम, सेवा और समर्पण के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है।

पूज्य महाराज जी को वंदन सहित,
आप सभी श्रद्धालुजनों को इस पावन अवसर पर कोटिशः शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

तपोनिष्ठ मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जयंती (प्रकटोत्सव) पर माननीय श्री पुष्कर सिंह धामी (मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड) द्वारा बधाई संदेश

पुष्कर सिंह धामी

मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय
देहरादून - 248001
फोन : 0135-2650433
0135-2716262
फैक्स : 0135-2712827
कैम्प कार्यालय
फोन : 0135-2750033
0135-2750344
फैक्स : 0135-2752144

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि श्री अमरापुर स्थान, जयपुर द्वारा परम पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की 139वीं जयंती (प्रकटोत्सव) का आयोजन दिनांक 26 जून से 30 जून 2025 तक वैश्विक स्तर पर किया जा रहा है । पूज्य सद्गुरु टेऊँराज जी महाराज का जीवन त्याग, सेवा, संयम एवं मानवता को समर्पित रहा । उनके बताए मार्ग और शिक्षाएँ आज भी समाज को नैतिक मूल्यों, परोपकार तथा आध्यात्मिक उत्थान की प्रेरणा प्रदान करती हैं । मुझे विश्वास है कि यह पावन आयोजन समाज में प्रेम, एकता एवं सद्भावना का संदेश देगा तथा जनकल्याण के कार्यों को गति प्रदान करेगा । मुझे यह भी आशा है कि इस आयोजन से युवा पीढ़ी उनके आदर्शों से मार्गदर्शन लेगी एवं अपने जीवन में नैतिकताऐं धर्म और कर्तव्य के पथ पर अग्रसर हो सकेंगे ।

मेरी ओर से स्वामी टेऊँराम जी महाराज के 139वां प्रकटोत्सव एवं इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की सफलता के लिए समस्त आयोजक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऐं ।

(पुष्कर सिंह धामी)

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जयंती महोत्सव पर माननीया श्रीमती दीया कुमारी (उप मुख्यमंत्री, राजस्थान) द्वारा बधाई सदेश

दिया कुमारी
उप मुख्यमंत्री
Diya Kumari
Deputy Chief Minister

वित, सार्वजनिक निर्माण, पर्यटन, कला, साहित्य, संस्कृति और पुरातत्व, महिला एवं बाल विकास, बाल अधिकारिता विभाग,
राजस्थान सरकार
Finance, PWD, Tourism, Art, Literature, Culture and Archaeology, W&CD and Child rights Department
Government of Rajasthan

शुभकामना संदेश

यह हर्ष का विषय है कि आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के १३६ वे प्रकटोत्सव (जयंती महोत्सव) का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर हार्दिक बधाई और सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज को मेरा सादर वन्दन।

परम सिद्ध संत स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने धार्मिक वातावरण और संतो, महात्माओं के सानिध्य सत्संग में अपना जीवन व्यतीत किया। उनके आदर्श और संस्कार हमारे लिए प्रेरणादायी और मार्गदर्शक रहेंगे। उनके द्वारा लिखित ग्रन्थावलियां, भजन, पद, छन्दावली, दोहावली, रचनाएं प्रेरणा का स्त्रोत है।

इस अवसर पर पूज्य महाराज श्री का जीवन चरित्र और प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा जन-हित के कार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रकाशन समाज में सेवा का संवाहक बनेगा। पूज्य सिंधी समाज के जनहित में समाज में किये जा रहे सेवा कार्य प्रशंसनीय व अनुकरणीय रहे हैं। मैं आशा करती हूं आगे भी इसी तरह के आयोजन किये जाते रहेंगे। यह आयोजन अपने उद्देश्यों को प्राप्त करें।

इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ....

(दिया कुमारी)

कमरा नं. 3104-05, मुख्य भवन, शासन सचिवालय, जयपुर-302005
फोन नं. 0141-2227533 | ई-मेल - diyakumarideputycm@rajasthan.gov.in
फोन 0141-2222199, 2222121 | ई-मेल-diyakumarioffice@gmail.com

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जन्मोत्सव पर बधाई सन्देश

कर्नल राज्यवर्धन राठौड़
ए वी एस एम
पद्मश्री खेल रत्न, अर्जुन अवार्ड

मंत्री, राजस्थान सरकार
उद्योग एवं वाणिज्य विभाग
सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग
युवा मामले और खेल विभाग
कौशल, नियोजन एवं उद्यमिता विभाग
सैनिक कल्याण विभाग
सांसद (2014-2023)
पूर्व केन्द्रीय मंत्री

शुभकामना संदेश

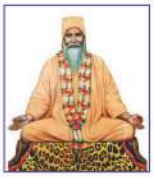

पूज्य संत टेऊँराम जी महाराज की १३६वीं जयंती के पावन अवसर पर श्रद्धा-सम्मानपूर्वक नमन करता हूँ। आपने अपने संत जीवन से समाज में सेवा, समर्पण और आध्यात्मिक चेतना आज भी मानवता को दिशा देने वाला प्रकाशस्तंभ है।

मेरी तरफ से इस शुभ अवसर पर आपको हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें.....

शुभकामनाओं सहित

Col Rajyavardhan

(कर्नल राज्यवर्धन राठौड़)

19, राम विहार, सिरसी रोड, पांच्यावाला जयपुर, राजस्थान- 302034
0141-2990000 | Mob: 9460998611 | colrvs@gmail.com | www.rajyavardhanrathore.in
Col Rajyavardhan Rathore | Rathore | Ra_THORe | ra_rathore

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जयन्ती महोत्सव पर बधाई सन्देश

गोपाल शर्मा
विधायक
सिविल लाइंस, जयपुर

राजस्थान विधानसभा

9829051742, 8107211887
sharma.gopal@hotmail.com

शनिवार, 28 जून, 2025
सिविल लाइंस, जयपुर

शुभकामना संदेश

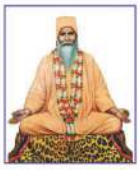

।। प्रेम प्रकाशी मंडलाचार्य, मंत्र साक्षी सतनाम ।।
।। धर्म सनातन के प्रचारक, नीति निपुण अभिराम ।।

ॐ श्री सतनाम साक्षी !

श्री प्रेम प्रकाश पंथ मंडलाचार्य योगीराज पूज्यपाद संत श्री 1008 सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की 139वीं जयंती के पावन अवसर पर सादर श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं ।

स्वामी जी के जीवन का प्रकाश, भक्ति और आध्यात्मिक शिक्षाएँ हमें सत्य, प्रेम और सेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं ।

इस शुभ अवसर पर श्री अमरापुर दरबार और सभी भक्तों के लिए स्वामी जी का आशीर्वाद सुख, समृद्धि और आनंद लेकर लाए ।

अनंत शुभकामनाओं सहित.......

भवदीय

(गोपाल शर्मा)

'सेवा भवन' 18-बी, गोविंदपुरी-ए, चंबल पॉवर हाऊस मार्ग, हवासड़क, जयपुर-302019

संक्षिप्त जीवन-दर्शन

मंगलमूर्ति आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

नाम : मंगलमूर्ति आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

जन्म : 6 जुलाई सन् 1887, सम्वत् 1944!

जन्म दिन : पावन शनिवार दिवस!

जन्म का माह/महीना : आषाढ़ मास!

जन्म समय : प्रातःकाल 5 बजे!

जन्म तिथि : षष्ठी तिथि (सिन्धी चौथ तारीख)!

जन्म के समय पक्ष : शुक्ल पक्ष!

कुल : फूलवंशी– क्षत्रिय कुल!

जन्म स्थान : पवित्र सिन्धु नदी का पावन तट!

जन्म के समय जिला : हैदराबाद!

जन्म के समय प्रदेश : सिन्ध देश!

जन्म के समय ग्राम : खण्डू!

पिताश्री : भक्तप्रवर श्री चेलाराम जी!

माताश्री : धर्ममयी माता कृष्णादेवी जी!

भ्राता : श्री टहलराम, श्री वेंसीमल, श्री ग्वाललाल!

बहनें : श्रीमती ज्ञानी बाई, श्रीमती ईश्वरी बाई!

नामकरण संस्कार : 'टेऊँ' (ब्रह्म से परिपूर्ण)!

नामकरण करने वाले पण्डित : श्री जयरामदास ब्राह्मण!

पण्डितों द्वारा भविष्यवाणी : यह बालक होनहार होगा और अवतार कहलायेगा!

अध्ययन : प्रभु चिन्तन में मग्न (ॐ से साक्षात्कार)!

भगवद् दर्शन : बाल अवस्था में सिन्धु नदी में जल के अन्दर वरुण देवता के दर्शन!

जिज्ञासा : आत्म चिन्तन कर भगवद् प्राप्ति करना!

दीक्षा गुरु : गुरुदेव दादा सांई आसूराम जी महाराज!

बाल्यावस्था की गूढ़ पहेली : अखर पखी रछ – रान्द जा के नर ना डिठा तो!

व्यापार (सेवा कार्य) : सच्चा सौदा नाम का!

बगीचा सम्भाल : बदन जे बाग में तोतो – मिठा नित बोल थो बोले!

तपस्या : गहन जंगल, श्मशान, सिन्धु नदी का तट, एकांत स्थान, रेत का टीला!

धर्म प्रचार : हिन्दू सनातन धर्म का प्रचार–प्रसार 55 वर्ष तक!

पंथ–मण्डल स्थापना : प्रेम प्रकाश पंथ!

सगुण प्रभाव मंत्र : ॐ श्री सत्नाम साक्षी!

आध्यात्मिक पवित्र ग्रंथ : श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ (795 पृष्ठीय)!

अनुभवी वाणी : श्री अमरापुर वाणी (हिन्दी भजन 921), सिन्धी भजन (770)!

सलोक माला : 108 पद सलोक माला!

आध्यात्मिक रचनाएँ : अमर कथा, ब्रह्मदर्शनी, प्रेम प्रकाश दोहावली, कवितावली–छन्दावली!

वेदों का सार तत्त्व : सोलह शिक्षाएँ!

सुख–शान्ति का पाठ : 60 शान्ति के दोहे!

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश राम–नाम का भजन करने से मनुष्य में परम उदारता व परोपकार के गुण अनायास ही आ जाते हैं।

प्रातःकालीन सामूहिक प्रार्थना : गुरु मांगू खजाना भजन दा.

वस्त्र-परिधान : खादी का चोला, टोपी!

कर कमलों में शोभित : चिप्पी, लाठी, इकतारा!

भजन आसन मुद्रा : सिद्धासन, पद्मासन!

चरण पादुका : खड़ाऊँ!

प्रभु से याचना :

सद्गुरु मुझको दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास।
कहे टेऊँ नित सुमति दे, सन्तनि मांहि निवास।।

ऐतिहासिक सिद्ध स्थल : श्री अमरापुर दरबार (डिब) टण्डाआदम सिन्ध!

भगवद् स्वरूप का साक्षात् दर्शन : भगवान वरुणदेव, लक्ष्मी नारायण एवं ब्राह्मणी के वेश में माँ लक्ष्मी के दर्शन!

प्रसिद्धि : डिब वाले सांई टेऊँराम बाबा!

पल्लव-अरदास : आशवन्दी गुरु तो दर आई, तुम बिन ठौर...!

इष्टदेव : भगवान श्री लक्ष्मी नारायण!

प्रसाद : ढ़ोढा चटनी महाप्रसाद (प्रेम से युक्त, स्नेह से सिक्त, भाव से भावित)!

निरन्तर प्रवाहित : सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज का अखण्ड भजन व भोजन भण्डारा प्रसाद!

प्रेम प्रकाश मण्डल के आधार स्तम्भ : देने वाले सांईं टेऊँराम बाबा, लेने वाले सांईं टेऊँराम बाबा!

प्रमुख उद्देश्य : प्रेम का प्रकाश फैलाना, सनातन धर्म का प्रचार करना, भूले-भटके जीवों को सत्यमार्ग का ज्ञान कराना!

सत् सन्देश : सर्व से तुम गुण उठाओ, दोष दृष्टी को हरे।
देख अवगुण आपना जो, बहुत है मन में भरे।।

शिष्य संतगण : आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के यहाँ 85-86 शिष्यों का संत मण्डल था आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के यहाँ 85-86 शिष्यों का संत मण्डल था जिसमें----

(1) स्वामी ग्वालानन्द जी महाराज, (2) स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, (3) स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज, (4) स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, (5) स्वामी माधवदास जी महाराज, (6) स्वामी बसन्तराम जी महाराज, (7) स्वामी धर्मप्रकाश जी महाराज, (8) स्वामी जयप्रकाश जी महाराज, (9) स्वामी चन्दनराम जी महाराज, (10) स्वामी ऊधवदास जी महाराज, (11) स्वामी गणेशानन्द जी महाराज, (12) स्वामी मुरलीधर जी महाराज, (13) स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज, (14) स्वामी जीवनमुक्त जी महाराज, (15) स्वामी गंगाराम जी महाराज, (16) स्वामी रविप्रकाश जी महाराज, (17) स्वामी भजनदास जी महाराज, (18) स्वामी वासुदेवराम जी महाराज, (19) स्वामी चेतनप्रकाश जी महाराज, (20) स्वामी सत्य प्रकाश जी महाराज, (21) संत नारायण प्रकाश जी, (22) संत केवलप्रकाश जी, (23) संत ईश्वरानन्द जी, (24) संत पहलाजराय जी, (25) संत किशनदास जी, (26) संत गोविन्दराम जी, (27) संत संतदास जी, (28) संत कृष्णानन्द जी, (29) संत मोहनप्रकाश जी, (30) संत धन्नाराम जी, (31) संत ज्ञान प्रकाश जी, (32) संत गंगाप्रकाश जी, (33) संत गंगादास जी, (34) संत धमनदास जी, (35) संत हंसप्रकाश जी,

(36) संत हंसाराम जी, (37) संत नामदेव जी, (38) संत हरिप्रकाश जी, (39) संत तीर्थप्रकाश जी, (40) संत अमरदेव जी, (41) संत रामदास जी, (42) संत भावनप्रकाश जी, (43) संत ओमप्रकाश जी, (44) संत पूर्णप्रकाश जी, (45) संत ज्योतिप्रकाश जी, (46) संत खीयाराम जी, (47) संत मेंघनदास जी (तबलावादक), (48) संत केवलराम जी (प्रज्ञाचक्षु), (49) संत ऊधवदास जी (ब्रह्मचारी, प्रज्ञाचक्षु), (50) संत वछायतराम जी, (51) संत मुक्तानन्द जी, (52) संत नानकराम जी, (53) संत खियानन्द जी, (54) संत विद्याप्रकाश जी, (55) संत नित्यप्रकाश जी, (56) संत आत्मानन्द जी, (57) संत हीरानन्द जी, (58) संत बद्रीप्रकाश जी, (59) संत दौलतराम जी, (60) संत संत देवप्रकाश जी, (61) संत भगवानदास जी, (62) संत प्रीतमदास जी, (63) संत हरिराम जी, (64) संत हंसराज जी, (65) संत हरदासराम जी, (66) संत चरणदास जी, (67) संत टहलराम जी, (68) संत परमेश्वरानन्द जी, (69) संत जीवनलाल जी, (70) संत कल्याणदास जी, (71) संत नित्यानन्द जी, (72) संत शंकरलाल जी, (73) संत परमानन्द जी, (74) संत मंघरराम जी, (75) संत पहलाजराम जी (कवि), (76) संत जयरामदास, (77) स्वामी स्वयंप्रकाश जी महाराज, (78) स्वामी रविप्रकाश जी महाराज, (79) संत लखीराम जी, (80) पं. सीतलदास जी, (81) महाराज हुन्दलदास जी, (82) संत हीरानन्द जी, आदि संतवृन्द थे!

अंशावतार : भगवान शिवस्वरूप सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

लीला संवरण : सम्वत् 1999, पुरुषोत्तम मास, पहला ज्येष्ठ, सिन्धी तारीख चौथी, सम्वत् 1999, दिन शनिवार– सन् 1942!

अमरपद : अमरलोक से आगमन, अमरलोक प्रस्थान!

धराधाम पर देशाटन : मात्र 55 वर्ष तक!

डिब की ख्याति : तप तपस्या की तपोस्थली रेत के टीले पर बनी अमरापुर दरबार!

पवित्र समाधि स्थल : श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर में!

वर्तमान तीर्थ स्थल : पावन श्री अमरापुर स्थान स्थान, जयपुर!

लीला दर्शन : खिल्लू को डूबने से बचाना, मरे हुए श्वान का उद्धार करना, चोर की कर्मरेखा मिटाकर चौकीदार बनाना, कण्डी वृक्ष के कांटे दूर करना, तीव्र गर्मी में वर्षा करना, डूबती नौका को पार लगाना, इन्द्र देवता द्वारा भेजी गयी 'माया' को पहचानना, सूखे कुएँ में जल प्रवाहित करना, सौ व्यक्तियों के भोजन से हजारों भक्तों को भरपेट भोजन खिलाना, सांईडिना को नशे पते की आदत से मुक्ति दिलाना, दुकान पर सच्चा सौदा नाम का लिखवाना, पत्थर के नीचे से जलधारा प्रवाहित करना, मिट्टी व पानी से भोजन बन जाना आदि सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन से जुड़े अनेक लीला–प्रसंग जीवन चरितामृत में उल्लेखित हैं.

–साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

परमात्मा सर्व शक्तिमान हैं। उनके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। इसलिए उनकी शरण लें तो आपके दुःख दर्द दूर हो जायेंगे।

सद्गुरु टेऊँराम जयंती पर विशेष पावन प्रसंग

अवतरण का उद्देश्य

हमारे गुरु महाराज स्वामी टेऊँराम जी सिन्ध में आध्यात्मिक जगत के एक प्रकाश स्तम्भ थे. वेदान्त व भक्ति के केन्द्र थे. यदि उस समय ऐसे महापुरुष का अवतरण नहीं होता तो न जाने कितने ही हमारे भाई-बहिन सिन्ध में इस्लाम धर्म में जाकर शामिल हो जाते. उस समय की मुझे पूरी जानकारी है कि लोगों में इतना वहम, भ्रम व अज्ञानता फैली हुई थी जिसका कोई शुमार ही नहीं! कितने ही हमारे हिन्दू भाई-बहिन वहाँ कब्रों पर जाकर मन्नतें माँगते और वहीं पर खाते-पीते थे. उस समय यदि किसी ने वैदिक धर्म का प्रचार- प्रसार किया तो वे थे हमारे गुरुदेव स्वामी टेऊँरामजी महाराज! जिन्होंने सिन्ध में सनातन धर्म की ध्वजा को मजबूत स्थापित किया. अतएव सारा जहान इस महापुरुष का ऋणी व एहसानमंद है. हमारे हिन्दू धर्म की रक्षा की, सभी को सत्यता व धर्म की राह दिखलाई. हम सब जीवों पर उन्हों के अनन्त उपकार हैं.

(श्रद्धेय सद्गुरु शान्तिप्रकाशजी महाराज)

साधू को सादगी में रहना चाहिए

जब मैं महाराज जी के पास श्री अमरापुर दरबार सिन्ध में रहता था, तो वहाँ नित्य स्नान आदि करके कपड़े बदलता था. रोज नये कपड़े पहनता था.

एक दिन महाराज जी ने कहा- क्यों भाई, रोज कपड़े बदलते रहते हो. रोज नये कपड़े पहनते हो- क्या शादी करनी है क्या? गृहस्थी बनना है क्या? 'महाराज श्री' कहा करते थे- भाई, साधु-संतों को जितना हो सके फैशन से बचना चाहिए, सादगी में रहना चाहिए. समय को बचाकर अधिक से अधिक भजन-साधना व सेवा करनी चाहिए. सादा व सरल जीवन साधुओं का होना चाहिए.

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

माता-पिता से मांगने वालों को भिखारी नहीं कहते,
पर दूसरों से मांगने वाले को फकीर या भिखारी कहा जाता है।

कथा सिखाने का तरीका

यह बात उस समय की है जब हम शुरू-शुरू में महाराज श्री के पास श्री अमरापुर दरबार सिन्ध में आये थे. तब हमें कथा वगैरह करने में संकोच होता था. फिर एक दिन महाराज जी ने आज्ञा करी कि जंगल में जाकर एकांत में बैठकर, वहाँ तुम कथा करो. वहाँ जो वृक्ष आदि हैं उनको तुम अपनी तरफ से नाम रखकर उन्हें कथा सुनाओ. आप मन में ऐसा समझो कि यह वृक्ष नहीं यह जिज्ञासु भक्त हैं हम इन्हें कथा सुना रहे हैं. ऐसी भावना करिये.

महाराज जी की आज्ञानुसार ऐसे करते-करते हमारा कथा करने का संकोच भी दूर हो गया और गुरुकृपा से कथा करना भी सीख गये. ऐसी अनन्त कृपा हमारे ऊपर भी श्री गुरुदेव भगवान ने की.

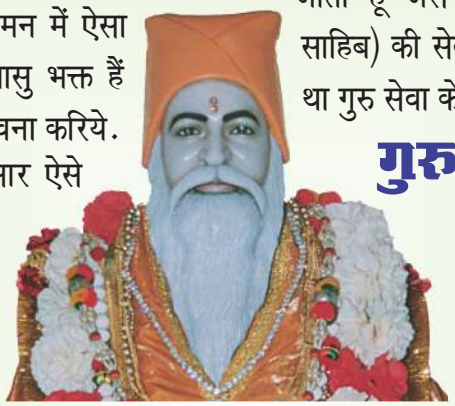

साईं आसूराम के प्रति निष्ठा

हमारे महाराज जी के गुरु, जिसे सब दादा साईं कहा करते थे. वे दादा साईं नवाहालन में, जो टण्डेआदम से थोड़ी दूरी पर है वहाँ रहते थे. महाराज जी दादा साईं आसूराम जी से मिलने के लिए गुप्त रूप से जाया करते थे.

एक दिन महाराज श्री पैदल ही पैदल चुपचाप दादा साईं आसूराम जी महाराज के यहाँ जा रहे थे, तो कुछ संतों ने देख लिया. देखकर निवेदन करने लगे- प्रभो! इस समय आप अकेले ही अकेले इधर की ओर जा रहे थे, कोई आपकी सेवा में भी नहीं है, यदि आप उचित समझें तो.....

महाराज जी ने कहा- भाई, हमें नवाहालन जाना था, इसलिए अकेले ही जा रहे हैं. फिर हमें भी सेवा में ले चलें, ऐसा संतों ने महाराज जी से कहा. नहीं भाई, वहाँ आपको जो ले चलूँगा तो फिर दादा साईंकी सेवा मेरे हाथसे निकल जायेगी, आप लोग जो वहाँ पर सेवा करेंगे, फिर मैं क्या करूँगा?

इसीलिये ही तो मैं चुपचाप एकांत में निकल जाता हूँ जैसे वहाँ दादा साईं (साईं आसूराम साहिब) की सेवा का अवसर मिल जाता है. ऐसा था गुरु सेवा के प्रति निष्ठा-भाव!

गुरु-शिष्य के प्रेम का अनोखा-दर्शन

एक बार हमारे सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को अपने गुरु दादा आसूराम जी से मिलने की तीव्र इच्छा हुई तो वे उनसे मिलने नवाहालन के लिए पैदल ही निकल पड़े. उधर से फिर दादा साईं भी टण्डाआदम की ओर आ रहे थे. दोनों का रास्ते में ही मेलाप हो गया. इस पर दादा साईं महाराज जी से पूछते हैं- क्यों भाई, इतनी तीव्रता से कहाँ जा रहे थे? तब महाराज जी ने कहा, आज आपके दर्शन की बहुत इच्छा हो रही थी सो आपके दर्शनों के लिए इतनी तीव्रता से इधर ही आ रहा था. दादा साईं ने कहा- भाई, जैसे आपको हमारे दर्शन की इतनी तीव्र उत्कण्ठा सता रही थी ऐसे ही मुझे भी आज आपसे मिलने की तीव्र अभिलाषा इधर खींच लायी. फिर प्रसन्नचित्त एक-दूसरे का प्रेमपूर्वक आलिंगन कर लिया. हुआ गुरु-शिष्य का अनोखा मिलन!

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश सब जीवों को परलोक के मार्ग में काम आने वाला सामान अभी से ही लेना चाहिये। सामान वह खरीदना चाहिए जो कभी भी पुराना न हो, न ही बेचने पर घाटा पड़े। वह है निष्काम सत्कर्म एवं नाम-स्मरण

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की गुण-महिमा के पावन प्रसंग

महापुरुषों के आज्ञा की अवहेलना न करें

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का आत्मानंद से बहुत स्नेह था. वे श्री अमरापुर दरबार (सिंध) में प्रातः कथा पढ़ते थे. इनके कथा पढ़ने का ढंग अत्यंत सरल व मधुर था. आत्मानंद जी कथा पढ़ते थे और महाराज जी उसका अर्थ समझाते थे.

एक दिन की बात है गर्मियों के दिन थे रात्रि का समय था, वहाँ एक राणो भगत करके रहते थे. महाराज जी ने आत्मानन्द को किसी कार्यवश राणे भगत के पास जाने की आज्ञा दी. आत्मानन्द आज्ञा पाकर जाने के लिए तैयार हुआ. जाते वक्त उसने हाथ में एक मोटी लठ (लठिया) उठाई. महाराज जी ने जब उसके हाथ में लकड़ी देखी तो पूछा- क्यों भाई, इतनी बड़ी मोटी लकड़ी क्यों उठाई है?

आत्मानन्द ने कहा- महाराज जी, जाते समय विचार आया कि रास्ते में साँप, बिच्छू आदि जीव जन्तु घूमते रहते हैं, कहीं वे काट न लें. इसीलिए सुरक्षा के लिए ये लठ उठायी है. महाराज जी ने कहा- नहीं बाबा, हम यहाँ बैठने से पहले ही इन साँप आदि से बात करके बैठे हैं कि आप हमें नहीं सताएँगे और हम भी आपको नहीं सताएँगे. अतएव तुम लकड़ी मत ले जाओ. आत्मानन्द ने उस समय तो तुरंत लकड़ी को वहीं रख दिया. फिर जब वह नीचे गया तो मन में पुनः भ्रम जागा, डर भी लगा. वापस आकर उसने फिर से लकड़ी उठा ली.

अब वह लठ हाथ में लेकर जाने लगा तो रास्ते में साँप ने उसे डँस लिया. और वह वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा. संतों ने आत्मानन्द से कहा- अरे भाई, आपको महाराज जी ने लकड़ी उठाने से मना किया था फिर लकड़ी क्यों उठाई?

जब महाराज जी और जीव जन्तुओं का आपस में समझौता किया हुआ था कि आप हमें कुछ नहीं करेंगे और हम भी आपको कुछ नहीं करेंगे तो फिर? जब इसके जवाबदार महाराज श्री बैठे हुए हैं तो आपको इसकी क्या चिंता? तुमने आज्ञा की अवहेलना की. जब सारे संत उसे (आत्मानन्द को) उठाकर महाराज जी के पास ले आए तब करुणावत्सल महाराज श्री ने अपनी कृपा की और कहा- भाई, इन्हें प्याज खिलाओ और देशी घी पिलाओ. महाराज जी की आज्ञा अनुसार ऐसा ही किया गया. महापुरुषों द्वारा बताया गया अमृत प्रसाद व भगवत् कृपा से थोड़ी ही देर में आत्मानन्द के ऊपर जो सर्प दंश का प्रभाव था वह धीरे-धीरे प्रभावहीन होने लगा और उसे होश आने लगा.

सीख : बड़ों की आज्ञा में अपनी नहीं चलानी चाहिए.

कृपा निधान

एक समय सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली के साथ कहीं जा रहे थे. मार्ग में एक सूरदास बालक जो मीठे स्वर में भजन गाकर भीख माँग रहा था. करुणा वत्सल गुरुदेव भगवान की दृष्टि उस बालक पर गई.

स्वामी जी ने बालक के पास जाकर उसके सिर पर वात्सल्य भाव से हाथ फेरा और बड़े दुलार-प्यार से पूछा- बेटा! यह भीख माँगने का तुच्छ कार्य क्यों कर रहे हो? बालक ने कहा- बाबाजी! रोटी खाने के लिए, अगर ऐसा कार्य नहीं करूँगा, तो घर वाले मुझे भोजन नहीं देंगे.

सद्गुरु महाराज जी को उस पर दया आ गई. महापुरुष तो कृपा निधान दया के सागर होते हैं, उनसे किसी का दुःख देखा नहीं जाता, तब स्वामी जी ने कहा- बेटे! केवल रोटी के लिए ये हल्का कार्य (भीख माँगना) कर रहा है. चलो हमारे साथ आश्रम पर, सेवा करो और भजन करो व भरपूर भोजन- प्रसाद पाओ. उसे आश्रम पर ले आये.

बालक के सूरदास होने के कारण किसी संत-सेवाधारी ने स्वामी जी से कहा- कौन इसका ध्यान रखेगा, कौन इसकी सेवा करेगा? तब वात्सल्य भाव से करुणानिधान सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने कहा- सभी में प्रभु परमात्मा निवास करते हैं. हम सब उसी की संतान हैं. इस बालक की सेवा 'मैं' स्वयं करूँगा और इसका ध्यान भी रखूँगा. देखो, दिव्य महापुरुषों की करुणा! कितना स्नेह, कितना दुलार!

कहते हैं कि स्वामी जी की उस बालक के ऊपर इतनी अनन्य कृपा हुई कि वह सूरदास बालक आगे चलकर एक पारंगत गायक बन गया और जीवन भर श्री गुरु दरबार की खूब सेवा करता रहा व नित्य नये-नये भजन गाकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को सुनाता. ऐसी होती है महापुरुषों की दिव्य विलक्षण कृपा!

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश दुनिया में कहने वाले मनुष्य बहुत हैं, करने वाला कोई विरला है।

सद्गुरु टेऊँराम चालीसा

संत वचन में शक्ति

सिन्ध प्रदेशके टण्डेआदम शहर में रेत के टीले के ऊपर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की बनाई 'श्री अमरापुर दरबार (डिब्)'. बात उस वक्त की है जब खाने-पीने का वहाँ अभाव हुआ करता था. आश्रम पर निर्माण कार्य प्रारम्भिक अवस्था में था. लोगों को वहाँ पहुँचना दुष्कर सा प्रतीत होता था. उसी काल में एक बार खाने के लिए आश्रम पर कुछ भी नहीं था. भूखसे सभी संत-सेवाधारी व्याकुल हो रहे थे. सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी निर्विकल्प समाधि में लीन थे. सभी संत सेवाधारी स्वामी जी के पास आए और कहा- हे प्रभु! आज आश्रम पर भोजन बनाने के लिए सीधा (सामग्री) नहीं है और सभी को भूख भी बहुत सता रही है. महापुरुषों की अपनी मौज होती है. स्वामी जी ने कहा- एक देग (तपेले) में जल व आश्रम की रेत डालकर अग्नि पर रख दो और ढक्कन ढक दो. समय पर 'सत्नाम साक्षी....' बोलकर भोजन पंगत शुरू कर देना. कौन समझे संत- महापुरुषों की अद्भुत लीलाओं को. संत वचन में होती है शक्ति. देखते-देखते ही समय पर उस रेत-पानी से नमकीन चावलों की देग (तपेला) तैयार हो गया. यह देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ. सभी ने भरपेट भोजन-प्रसाद पाया. संत महापुरुषों की ऐसी अक्षुण्ण शक्ति को समझ पाना बड़ा कठिन है.

अतिथि देवो भवः

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज में निर्मानता के साथ-साथ सेवा का भी विशेष गुण था. किसी भी सेवा कार्य को करने में वे कभी संकोच, हिचकते या शर्माते नहीं थे. पद-प्रतिष्ठित होने पर भी उनमें सेवा का वही भाव उनके जीवन काल में देखा गया.

एक बार दोपहर को कुछ अतिथि सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का दर्शन व सत्संग श्रवण करने के लिए श्री अमरापुर दरबार पर आये. वे लोग सद्गुरु महाराज जी से परिचित नहीं थे, उनका यश-कीर्ति सुनकर ही दर्शनों के लिए खिंचे चले आये थे. उस समय सभी संत-सेवाधारी विश्राम कर रहे थे, केवल सद्गुरु महाराज जी ही जाग रहे थे. वे लोग स्वामी जी से मिले और पूछा- स्वामी टेऊँराम जी कहाँ हैं? हम सब उनके दर्शनों के लिए आये हैं.

स्वामी जी ने कहा- पहले आप भोजन प्रसाद ग्रहण करो, विश्राम कर लो. शाम को दर्शन कर लेना. उस समय स्वामी जी ने अपने हाथों से साफ-सफाई कर भोजन खिलाया, जल पिलाया और आराम के लिए आसन दिया. दूसरों को उपदेश करना कितना सरल होता है किन्तु स्वयं उस पर चलना बड़ा कठिन. परन्तु स्वामी जी में कथनी और करनी एक समान थी.

सायंकाल वे अतिथि जब स्वामी जी के दर्शन करने पहुँचे तो देखकर हैरान रह गये. अरे! इन्होंने ही तो दोपहर को हमारी सेवा की थी. भोजन खिलाया, जल पिलाया और आसन दिया. ऐसे निर्मानी संत-सत्पुरुष के दर्शन करके हम तो धन्य-धन्य हो गये.

महापुरुषों की अवधूती मस्ती

एक समय सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज श्री अमरापुर दरबार (डिब्) पर वृक्ष के छाँव तले भजनानन्द की मस्ती में बैठे थे. अवधूती मस्ती का अनोखा आलम! मुख मण्डल पर दिव्य आभा, भक्ति-तपस्या का तेजपुंज! कौन समझे उन संत-फकीर-साईं मुर्शिदों की रमझ को.

उसी समय आया एक गवैया सूरश्याम केवलराम भक्त. उस भक्त के पास थी संगीत की अद्भुत कला, गाने- बजाने में था निपुण. उसने साईं के सामने बहुत ही मधुर स्वर में भजन गाए.

भक्ति-भाव के भजन सुन साईं टेऊँराम बाबा बहुत प्रसन्न हुए. उस समय श्री साईं टेऊँराम बाबा ने हृदय से प्रसन्न होकर केवलराम से कहा- हे भगत जी! आज हम तुम्हारे भजन भाव से बहुत प्रसन्न हुए हैं. माँग लो, आज जो कुछ भी माँगोगे वह तुम्हें अवश्य ही मिलेगा. परन्तु कहते हैं न कि जिसके भाग्य में न हो या फिर जिसे संत महापुरुषों से माँगना नहीं आता हो, फिर भला उसे कुछ कह सकते हैं. उन भोले-भाले भक्तों को क्या मालूम कि उस समय तपस्वी महापुरुषों की स्थिति कितनी अद्भुत होती है. उस क्षण जो भी माँगा जाये वह अवश्य ही मिल जाता है. परमात्मा भी उस वचन को टाल नहीं सकते. फिर समय निकल जाने पर कुछ भी हाथ नहीं आता.

बस! फिर क्या था उस समय उस भोले-भाले सूरश्याम भक्त केवलराम को साईं टेऊँराम बाबा जी से माँगना नहीं आया. और उनसे एक तुच्छ वस्तु गर्म कोट माँगा. अगर थोड़ा सोच समझ या विचार करके सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से नेत्र-ज्योति (आँखों की रोशनी) माँग लेता तो वह भी उसे आज अवश्य मिल जाती और उसका जीवन सँवर जाता. उन नेत्रों से भगवान व श्री गुरुदेव के दर्शन भी करता. पर उस समय कृपादृष्टि का लाभ हर कोई नहीं ले पाता. महापुरुषों की उस समय की स्थिति बड़ी अद्भुत होती है.

कुछ समय बाद वैराग्यमयी नज़रों से निहारकर साईं टेऊँराम बाबा जी ने कहा- अरे भाई केवलराम! तुमने ये क्या तुच्छ वस्तु माँग ली, अरे! तुम्हें माँगना भी नहीं आया. आज अगर तुम नेत्र (आँखों की ज्योति) भी माँगते तो वह भी तुम्हें प्राप्त हो जाती. पर तुम्हें आज माँगने भी नहीं आया. किन्तु अब वह बन्दगी वाली स्थिति, समय, घड़ी हाथ से निकल गई. अर्थात् बड़ा सुन्दर अवसर गँवा दिया.

-साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी शास्त्रों एवं संतो की वाणी का अभ्यास करने से आपके मन का दर्पण साफ होगा। यदि मन निर्मल है तो आप प्रभु का दर्शन कर सकते हैं।

सद्गुरु टेऊँराम चालीसा

जगत कल्याण के लिए नर तन में अवतरित हुए सद्गुरु टेऊँराम जी

जन्मोत्सव के आनन्द के साथ साईं टेऊँराम चालीसा सम्पन्न

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का 139वाँ जन्मोत्सव पूर्ण श्रद्धा एवं धूमधाम से मनाया गया

युगों युगो से भारतभूमि संतों सत्पुरुषों के दिव्य अवतरण से पावन होती रही है. हम अज्ञानी जीवों के उद्धार हेतु सत्पुरुषों का अवतरण होता है. वे अपने दिव्य आचरण से हमें देते हैं सत्मार्ग की ओर चलने की प्रेरणा!

सत्पुरुषों सत्गुरुदेव के द्वारा बताये सत्य-मार्ग पर जब मनुष्य आचरणीय होने लगता है तब वह गुरुकृपा से अपने ही अंदर विराज रहे परमात्म स्वरूप परम सत्ता का साक्षात्कार करने में समर्थ हो जाता है और अपने जीवन को धन्य बनाता है.

सत्य सनातन धर्म के एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ, सत्यमार्ग के प्रणेता, सर्व सद्गुणों की खान, पूर्ण ब्रह्मतत्त्वज्ञ, ब्रह्मज्ञानी, मानव कल्याण हेतु प्रवर्त्तित श्री प्रेम प्रकाश पंथ के आचार्यश्री १००८ मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के १३९ वें पावन अवतरण दिवस का पंचदिवसीय आनन्दोत्सव मेला देश-दुनिया में फेले प्रेमप्रकाशियों द्वारा बड़े ही उल्लासभाव से प्रसन्न-विभोर होकर मनाया गया. इसे हम ४१ दिवसीय मेला भी कहें तो शायद कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी. सद्गुरु टेऊँराम भगवान की जय-जयकार-गजकार से समस्त लोक आनन्दित हो उठे. सद्गुरु टेऊँराम भगवान के आनन्दलोक में रमण करते लाखों भक्तों के हृदय खुशी से विभोर होकर अमृतरस का आस्वादन करते रहे. भक्तिरस के असीम हृदयानन्द से सबकी आँखें एक दिव्य तेज से चमकने लगीं. देश हो या दुनिया के अन्य मुल्क, जहाँ-जहाँ हमारे आचार्यश्री के आश्रम/ मंदिर स्थपित हैं, लेकिन यहाँ पर यह कहना भी एक सीमा में बंधना ही कहा जाएगा; क्योंकि इन सीमाओं से परे अनेक अन्य मंदिरों में भी हमारे हृदयाधार सद्गुरु टेऊँराम महाराज का आनन्दोत्सव मेला बड़े ही जोश उल्लास-उमंग के साथ भक्तिपूर्वक मनाया गया.

युग महाविभूति सद्गुरु टेऊँराम भगवान के आनन्दोत्सव/ आनन्दमेले से समूचे प्रेमप्रकाशी संसार में भक्तिमय स्फूर्ति का नवसंचार हो उठता है. आचार्यश्री सद्गुरु टेऊँराम भगवान का १३९वाँ अवतरण दिवस, २६ जून, गुरुवार से ३० जून, सोमवार तक पूरी दुनिया में अत्यंत उत्साह उमंगता से मनाया गया. २१ मई से प्रारम्भ सद्गुरु टेऊँराम चालीहे को भी पूर्णता मिली.

सद्गुरु टेऊँराम जन्मोत्सव मेले में समस्त दुनिया में फैले प्रेमप्रकाशी सद्गुरु टेऊँराम बाबा के आनन्दलोक की विस्मयकारी यात्रा पर रहे. आइये लेखनी के माध्यम से हम भी आनन्दोत्सव के उन अनिर्वचनीय क्षणों में मानसी रूप से विचरण करें.

प्राप्त समाचारों का विश्लेषण करने पर यही महसूस हो रहा है कि वर्ष-दर-वर्ष सभी स्थानों पर आनन्दोत्सव और अधिक उल्लासमयी कार्यक्रमों के साथ आयोजित किये जा रहे हैं. चारों ओर आनन्द वर्खा की मंगलमयी रिमझिम फुहारों से लाखों प्रेमियों के मन में गुरुभक्ति का संचार होता दिखाई दे रहा है. भक्तों के हृदय प्रभु परमात्मा व सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की प्रेमाभक्ति में और अधिक दृढ़ होकर जगमगा रहे हैं. यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि इन दिनों प्रेमप्रकाशी संसार सद्गुरु टेऊँराम बाबा की भक्तिनगरी आनन्दलोक में मंत्रमुग्ध होकर डूबा रहा.

साईं टेऊँराम चालीहा : २१ मई को चालीस दिवसीय साईं टेऊँराम चालीहे का आरम्भ हुआ, इसके लिये सभी भक्तजनों में उल्लास छाया हुआ था. इस वर्ष साईं टेऊँराम चालीहे के लिए उत्साह पिछले वर्षों से अधिक दिखाई पड़ा. साईं टेऊँराम चालीहे के अन्तर्गत प्रतिदिन लगभग हर आश्रम पर गुरुदेव दर्शन के साथ दीप प्रकाश करके सैकड़ों महिलाओं-बालिकाओं-प्रेमियों ने मनवाँछित फल पाने को माता कृष्णा की भांति व्रत धारण किया (इस व्रत में प्रतिदिन एक समय भोजन करना, सत्यधर्म का

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

समय किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता। वह अपनी अबाध गति से अपने पथ पर निरन्तर चलता ही रहता है। जहाँ तक पढ़ने, सुनने, देखने और मन की गति है, वह सब समय के अधीन है

पालन करना, किसी की निंदा न करना, सदा गुरुनाम (मन्त्र) का सुमरण करते रहना). अनेक आश्रमों पर चालीस दिन ही प्रातः को हवन-यज्ञ, अन्नक्षेत्र, अनेक जनोपयोगी कार्य, बच्चों को सुस्कारित करने के लिये संस्कार शिविर, स्वास्थ्य शिविर इत्यादि आयोजन के साथ साईं टेऊँराम जन्म साखी का सामूहिक गायन व रात्रि को साईं टेऊँराम चालीसा का पाठ भक्तों द्वारा किया गया. अनेक शहरों के आश्रमों मण्डलियों द्वारा ४० दिन ही प्रतिदिन अलग-अलग प्रेमियों के घरों में साईं टेऊँराम सत्संग ज्ञानधारा का संगीतमय अमृत प्रवाह हुआ.

सोशल मीडिया में भी साईं टेऊँराम आनन्दोत्सव :

साईं टेऊँराम अवतरण दिवस आनन्दोत्सव की खुशियों को बधाईयों के माध्यम से पूरे संसार में लाखों भक्तों ने संचार माध्यमों की तीव्र पहुँच द्वारा साईं टेऊँराममय बना दिया. इन दिनों में फेसबुक, व्हाटसएप, टिवट्र इत्यादि पर बस साईं टेऊँराम भगवान के चित्र-संदेश छाये रहे. वैसे आपकी जानकारी हेतु बता दें कि २१ मई से ही सोशल मीडिया पर नित्य साईं टेऊँराम बाबा की अद्भुत महिमा कथाओं का प्रसार होता रहा. परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अमृतमयी वाणी में सांई टेऊँराम की महिमा अपार के भजन का वीडियों भी सोशल मीडिया पर प्रतिदिन प्रसारित होता रहा । साईं टेऊँराम अवतरण दिवस ३० जून को अनेक शहरों में स्थानीय समाचार पत्रों व मीडिया द्वारा भी साईं टेऊँराम जन्मोत्सव को उचित कवरेज दिया गया.

श्रीदरबार की अद्भुत छटा : सुगंधित रंग- रंगीले फूलों व विविध प्रकार की सजावटी वस्तुओं, तोरण आदि से आश्रम-श्रीमंदिर का सुंदरतम दिव्य स्वरूप देखकर प्रेमियों के हृदय आनन्द गंगा में लहराने लगे. आश्रमों मंदिरों के अलावा, घर आँगन में सायंकाल को दीपमाला से झिलमिलाती इन्द्रधनुषी ज्योतियों के दिव्यतम नज़ारे. विद्युतीय छोटे-छोटे बल्बों रंगीन प्रकाश के कलात्मक नज़ारों के दर्शन हो रहे थे साईं टेऊँराम बाबा के आनन्दोत्सव में.

घर-घर दीपोत्सव : जयपुर, अहमदाबाद, अजमेर, रायपुर, कानपुर, ब्यावर, कोटा, इन्दौर, ग्वालियर, आगरा, दिल्ली, सहित लगभग सभी शहरों के प्रेमियों द्वारा साईं टेऊँराम अवतरण दिवस ३० जून को अपने-अपने घरों- प्रतिष्ठानों में दीपक जलाकर आनन्दोत्सव मनाया गया.

उल्लासमय साईं टेऊँराम बाबा के जन्मोत्सव का विवरण अवर्णननीय सा प्रतीत हो रहा है. सभी की अपेक्षाएँ/ भावनाएँ कि हमारे नगर का विवरण सविस्तार प्रकाशित किया जावे, और यह सोचना स्वाभाविक भी है, और सच बात तो यही है कि हमारी भी यही भावना है लेकिन यह छोटा सा पत्र है, सीमाबद्ध होने से विस्तारित वर्णन तो करने में हम असमर्थ हैं, फिर भी सद्प्रयास करते रहे हैं आपकी अपेक्षाओं को पूरा करने का-

परम पावन गुरुधाम श्री अमरापुर स्थान, जयपुर का समाचार सविस्तार दिया जाने का प्रयास किया गया है. इसे पढ़कर ही हम सब समझ जाएँगे की इसी भाँति शेष समस्त स्थानों आश्रमों पर आनन्दोत्सव के परम्परागत व विशिष्ट कार्यक्रमों का किस आनन्दोल्लास से आयोजन हुआ होगा. हृदय से प्रयास कर रहे है कि सभी की भावनाओं को कम शब्दों में भी दर्शाया जा सके. आश्रम व्यवस्थापकों, सेवा मण्डलियों, संदेश प्रतिनिधियों के साथ उन आनन्द-विभोर करते हर्षातिरेक क्षणों को प्रेमप्रकाशियों के वैकुण्ठलोक 'अमरापुर धाम' सहित आनन्दलोक यात्रा से समेटें दिव्य जन्मोत्सव के आनन्दमेले को-

जयपुर, राजस्थान

लघु काशी, गुलाबी रंगत लिये गुरु नगरी जयपुर के गुरुभक्तों के आनन्दोल्लास का कारण- सद्गुरु टेऊँराम महाराज का १३९वां जन्मोत्सव देश-दुनिया में मनाया जा रहा है, के प्रारम्भ में हाजरांहजूर पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की परम पावन सानिध्यता! तो सबके मन हृदय प्रफुल्लित हो रहे थे. हमारी रग-रग में बसे मंगलमूर्ति आचार्य श्री श्री १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के आनन्दोत्सव की पंचदिवसीय आनन्दलोक यात्रा २६ जून को शुरू होने जा रही है, जिसकी सेवा व्यवस्थाएँ मेले की पूर्व संध्या पर संतों की उपस्थिति व मार्गदर्शन में कर्मठ समर्पित सेवाधारियों द्वारा पूर्ण की गईं. सद्गुरु टेऊँराम जन्मोत्सव मेले में शामिल होने के लिए २६ जून को भोरकाल से दिन भर हजारों हजार प्रेमी उमड़ते रहे. हर कोई आनन्दपूर्णता के इन क्षणों को गुरु बाबा के सानिध्य में अपने हृदय में अमिट करने को उत्सुक था.

सिंध प्रांत के महान सिद्ध संत प्रेम प्रकाश मंडल के संस्थापक युगपुरुष १००८ आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन १३९ वे जन्मोत्सव सोमवार ३० जून पर श्री अमरापुर स्थान जयपुर में ब्रह्म मुहूर्त में प्रातः ५ बजे गंगा जल एवं पंचामृत से आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का संतो एवं ब्राह्मणों द्वारा दिव्य अभिषेक किया गया, तत्पश्चात ४० मिनट हवन यज्ञ अनुष्ठान का आयोजन हुआ। हजारों की संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं ने यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात गुरु महाराज जी के समक्ष इन ४० दिनों में हुई गलती भूल के लिए क्षमा याचना प्रार्थना कर अखंड ज्योति के दर्शन कर मोली का विसर्जन कर

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश जिस किसी को भी प्रभु परमात्मा का सच्चा प्रेम लग जाता है, तो फिर उसको जाति-पाति और वर्णाश्रमों के सुदृढ़ बन्धन भी कभी बान्ध नहीं सकते।

तुलसी पत्र ग्रहण करके **''सद्गुरु टेऊँराम चालीहा अनुष्ठान''** का समापन किया । पंच दिवसीय श्रीमद्भगवत गीता, श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहिब के पाठों के भोग परायण के साथ दीप प्रज्वलन कर १३९ किलो महाप्रसादी का भोग लगाया गया। सतगुरु महाराज जी के अवतरण दिवस पर मंगल बधाई गीत गाए गऐ । २५ हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने महाभंडारे का प्रसाद ग्रहण किया । १ लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने पंच दिवसीय जन्मोत्सव पर गुरु दरबार का दर्शन दीदार किया । जन्मोत्सव के उपलक्ष में सेवा कार्य के तहत ''विशाल रक्त दान शिविर'' का आयोजन भी किया गया । जिसमें १०८ यूनिट रक्त दान एकत्रित हुआ । मंदिर परिसर में आकर्षक रंगोली सजाई गई। समाधि स्थल श्री मंदिर को ऋतु पुष्पों से श्रृंगारित किया गया। सायंकाल के समय मंदिर परिसर में दीप प्रज्वलित किए गए ।

श्रीमंदिर में भी फूलों का बंगला बनाया गया था, जिसकी अनुपम कलाएँ देखकर मन मयूर प्रसन्नावेग से चहक उठा. फूलों की सुगंध के साथ बाबा टेऊँराम के दिव्य स्वरूप के दर्शन कर मन आनन्द सागर में भीगने लगा. रोम-रोम पुलकित हो उठा और दिल नव स्फूर्ति से संचारित होने लगा. श्रीमंदिर रंगारंगी विद्युतीय जगमगाहट से भी शोभायमान था.

प्रथम दिवस पर नन्हें विद्यार्थियों द्वारा प्रातःकालीन नित्य नियम प्रार्थना गायन के बाद हमारे प्यारे गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के पुण्यमयी सानिध्य में पंचदिवसीय श्रीमद्भगवद्गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठारम्भ कर सद्गुरु टेऊँराम जन्मोत्सव का विधिवत् शुभारम्भ हुआ. तत्पश्चात् परम पूज्य गुरुदेव भगवान के पावन श्रीमुख से प्रवाहित ज्ञानगंगा की अमृत रसधारा से उपस्थित हजारों प्रेमियों के तप्त हृदय गुरुनाम व भगवत्भक्ति की प्रीति में तरंगित होकर शीतल और सुदृढ़ हुए.

जन्मोत्सव की सायंकालीन सत्संग सभा में पूज्य गुरु महाराज जी के अमृत वचनों की वर्खा ने प्रेमियों से खचाखच भरे अमरापुर सत्संग सभालय को ज्ञानरस से भिगो दिया.

सायंकालीन सत्संग सभा के अंत में आचार्यश्री की महाआरती का दिव्यतम नज़ारा! हमारे प्यारे गुरुदेव भगवान के सानिध्य में संतों व हजारों हजार गुरुमुख प्रेमियों द्वारा महाआरती की गई. सचमुच में श्रद्धा प्रेम भक्ति युक्त इस अद्वितीय नज़ारे ने जन्मोत्सव के पहले दिन ही सबको आनन्द-विभोर कर दिया. सायं ६:३० बजे श्लोक मंत्र- उच्चारण के साथ जैसे ही महाआरती का आह्वान हुआ वैसे ही सम्पूर्ण श्रीदरबार के परिसर में आरती के मधुर स्वर गूँज उठे.

सद्गुरुदेव भगवान, पूज्य संतों के साथ महाआरती के लिए हजारों हजार भक्तों के चेहरों से ही आनन्दोल्लास परिलक्षित हो रहा था. सभी प्रेमी अपने-अपने स्थान पर हाथ में प्रज्वलित दीपक लेकर बड़े ही प्रेम व श्रद्धा से बाबा की आरती में मनोयोग से शामिल थे. महाआरती में भाग लेने वाले अनेक प्रेमी एकसी वेशभूषा धारण किये हुए थे. सत्संग परिसर के इस अभिनव दृश्यावलोकन से मन मयूर आनन्दलोक में उड़ाने भरने लगा- हजारों हजार दीपों को थालियों में जगमगाते हुए देखकर विस्मित हृदयान्तर से आवाज आने लगी कि यही तो है आनन्दलोक- वैकुण्ठलोक!

- २७ जून को ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया ।
- सायंकाल को बाबा टेऊँराम को नौका विहार कराया गया ।
- ४० फुट लम्बी गुफा में विराजे सांई टेऊँराम बाबा सुंदर झांकी सजायी गयी
- ५०१ कन्याओं को भोजन कराकर यथायोग्य भेट आदि दी गयी ।
- भजन-अन्ताक्षर प्रतियोगिता का आयोजन भी खास रहा ।
- स्वामी टेऊँराम चित्र बनाओ प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया
- १३९ व्यंजन-भोग झांकी सजायी गयी ।
- अंतिम दिवस प्रातःकालीन वेला में आचार्यश्री जी के जन्म के समय पंडितों ब्राह्मणों द्वारा गंगाजल, पंचामृत एवं विभिन्न तरह की औषधी तथा विभिन्न प्रकार के शुद्ध जूसों, शहद, गौ दुग्ध, भूरा, हल्दी आदि से आचार्यश्री का अभिषेक किया गया तत्पश्चात् आचार्य श्री सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के समक्ष अखंड ज्योत प्रज्वलित कर तुलसी पत्र ग्रहण कराकर चालीहा साहब का व्रत पूर्ण करवाया गया। ४० मिनट का हवन यज्ञ अनुष्ठान, नित्य नियम प्रार्थना, संत महात्माओं द्वारा भजन संकीर्तन, श्रीमद् भागवत गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहिब के पाठों का भोग पारायण, १३९ किलो महाप्रसादी के लड्डू का भोग, दीप प्रज्वलन एवं बधाई गीत शहनाई वादन आदि का कार्यक्रम हुआ।
- श्री अमरापुर स्थान के बाहर निरंतर चल रहे अन्न क्षेत्र में पुलाव के साथ-साथ मिष्ठान एवं शर्बत राहगीरों को वितरित किया गया।
- सांयकाल के समय मंदिर प्रांगण को १३९ दीपों से सजाया गया एवं श्री मंदिर एवं समाधि साहब को ऋतु पुष्पों से फूल बंगला सजाया गया।
- गुरु भक्त प्रेमियों ने हजारों की संख्या में गुरु महाराज जी की भंडारा प्रसादी का आनंद लिया।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश आप भक्ति, शुभ कर्म का बीज बोते जाओ कोई न कोई दाना अवश्य उगेगा ।

खण्डू व टण्डोआदम (सिन्ध)

सिंध प्रदेश (पाकिस्तान) के विभिन्न नगरों कंधकोट, चक, गौंसपुर, बढाणी, कश्मोर, मलीर के प्रेम प्रकाश आश्रमों में भी जन्मोत्सव मेले में हजारों सिंधवासी शामिल हुए. खूब मौज मचाई सिंधवासियों ने साईं टेऊँराम भगवान की जन्म भूमि पर. यहाँ पर एक आकर्षक झूले में साईं टेऊँराम को झुलाया गया और १३६ आरती थालियों में दीपक प्रज्वलित करके महाआरती की गई. एक बड़ा सुंदर केक साईं टेऊँराम बाबा के आगे भोग के लिए रखा गया. कई भगतों एवं प्रेम प्रकाश मण्डलियों द्वारा साईं टेऊँराम महिमा के भजनों का आनन्द संगत को कराया गया. अंत में आम भण्डारा हुआ.

अजमेर

वेदांत केसरी पूज्य स्वामी बसंतराम जी महाराज की तपोभूमि, उन्हीं के द्वारा स्थापित श्री प्रेम प्रकाश आश्रम का समूचा परिसर साज-सजावट के विविध वस्तुओं से शृँगारित होकर उल्लासित था, कहते हैं न जब आनन्दोत्सव होता है तो भक्तों का रोम-रोम और उस पावन स्थल का कण-कण उल्लास भाव से आनन्दित हो उठता है ये उक्ति यहाँ पर पूर्णरूपेण साकार होती दिखाई पड़ रही है. वेदांत मर्मज्ञ संत शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज, संत राजूराम जी के सानिध्य में जन्मोत्सव मेले का प्रमुख आयोजन यहीं पर मनाया जा रहा है. आपको पुनः स्मरण करा दें कि खण्डू आश्रम की सेवा संभाल पूज्य स्वामी बसंतराम जी महाराज ही करते थे और आचार्यश्री के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् पहली बार खण्डू में सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में उस समय आचार्यश्री सद्गुरु टेऊँराम बाबा का जन्मोत्सव मनाया गया था, उसी परम्परा का अनुपालन श्री प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा तभी से निरंतर किया जा रहा है. जन्मोत्सव मेले में शामिल होने के लिए हमारे प्यारे गुरुदेव भगवान २७ जून को पधारे.

जन्मोत्सव मेले के अन्तर्गत २६ जून को प्रातः पाठ रखे गये, तत्पश्चात् हवन-यज्ञ द्वारा देव-देवताओं व गुरुदेवों का मंत्रोच्चार द्वारा आह्वान करके आहुतियाँ दी गईं. सायंकाल को बाल मण्डली द्वारा सद्गुरु टेऊँराम भगवान के महिमा गीत-भजनों पर नृत्यानन्द हुआ.

२७ से ३० जून तक नित्यप्रति सत्संग की मौज प्रातः ८ से ११ व सायं ४ से ८.३० बजे तक में हजारों प्रेमियों ने आनंद लिया । जन्मोत्सव के दिवस ३० जून को प्रातः ६ बजे आचार्यश्री सद्गुरुदेवों के दिव्यतम श्रीविग्रहों का पूजन-अभिषेक वेद मंत्रोच्चारण के साथ पवित्र वस्तुओं से किया गया । नूतन वस्त्रालंकार के बाद छप्पन प्रकार के व्यंजन भोग हेतू भक्तिभाव से आचार्यश्री के समक्ष रखे गये । पूज्य महाराजश्री एवं पूज्य संतों एवं प्रेमियों द्वारा आचार्यश्री की महाआरती की गयी । इसके बाद हवन-यज्ञ हुआ तत्पश्चात् श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजावंदन गाजे बाजे के साथ पूज्य महाराजश्री एवं संतों के द्वारा किया गया । सांयकालीन सत्संग सभा में पल्लव पाकर अजमेर में आयोजित जन्मोत्सव मेले का समापन किया गया । अंत में जब पूज्य महाराजश्री के श्रीमुख से बधाई गान व सांई टेऊँराम धुनि का मंगलगान हुआ तो सारी संगत आनन्दित हो नाचने- झूमने लगी ।

ग्वालियर

प्रेम प्रकाश आश्रम के शृँगारित श्रीमंदिर की अनुपम सुंदरताके दर्शनानन्द से भक्तिविभोर प्रेमियों ने संत हरिओमलाल जी के सानिध्य में आनन्दलोक में सद्गुरु साईं टेऊँराम बाबा का गुणानुवाद श्रवण किया. संत प्रतापराय जी (मुरैना) एवं संत छोटूराम जी (डबरा), संत प्रहलाददास शास्त्री ने भी जन्मोत्सव मेले की रौनक बढ़ाई. अन्य आश्रमों की भजन मण्डलियों ने पधारकर संगत को भगवन्नाम के अलौकिक आनन्द से मालामाल किया. संत प्रतापलाल ने साईं टेऊँराम भगवान के लीला प्रंसगों को सुनाकर संगत के हृदयों को सद्गुरु टेऊँराम भगवान की प्रेमाभक्ति में आनन्द विभोर कर दिया. बालक-बालिका मण्डली द्वारा नाटक एवं नृत्य का रंग-रंगीला मंचन भी आनन्दवर्धक रहा . श्री अमरापुर नवयुवक मण्डली द्वारा गोसेवा, वानर सेवा, दीन-अनाथ बालिकाओं की सेवा, वृद्धाश्रम सेवा व मुख्य मार्ग पर २८ जून को अन्नक्षेत्र का आयोजन भी खास रहा. २६ जून को ५६ भोग का कार्यक्रम भी विशेष रहा । ३० जून को सायंकाल विविध आकार-प्रकार के केक आचार्यश्री के समक्ष भोग के लिये रखे गये. दीपोज्ज्वलन के बाद शहनाई ढोल पर साईं टेऊँराम मंगलगान पर सारी संगत झूम उठी. चालीहा का आयोजन भी इस बार पूरे उत्साह आनन्द के साथ सम्पन्न हुआ.

कोटा

कोटा में दिनांक २६ से ३० जून तक श्रीपुरा क्षेत्र में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम एवं शहर के विभिन्न स्थानों पर सांई टेऊँराम बाबा का १३६वां जन्मोत्सव बड़े ही धूम-धाम से मनाया गया । श्रीपुरा स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम तो अपनी दिव्यता से आनन्दोत्सव का मुख्य केन्द्र रहा ही, इसके अलावा भी हजारों हजार प्रेमियों ने श्री झूलेलाल मंदिर, विज्ञान नगर व दादाबाड़ी, बजरंग नगर में भी विशेष कार्यक्रम हुए.

इसके अंतर्गत कोटा आश्रम पर दिनांक २६ जून २०२५, गुरुवार से २६ जून २०२५, रविवार तक प्रतिदिन प्रातः ७-०० बजे से १०-०० बजे तक हवन यज्ञ अनुष्ठान, नित्य नियम प्रार्थना के

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी जब कोई सांसारिक पदार्थों एवं कार्यों का त्याग करता है तब वह परमात्मा के निकट होता है।

साथ चालीसा पाठ एवं आरती का आयोजन किया गया। दिनांक २६ जून २०२५, गुरुवार को सांयकाल श्री झूलेलाल साईं का चण्ड्र बहराणा एवं जन्मोत्सव का रंगारंग कार्यक्रम श्री झूलेलाल मंदिर, विज्ञान नगर पर किया गया ।

दिनांक २७ जून २०२५, शुक्रवार को सांयकाल श्री गुरु महाराज जी जन्मोत्सव का रंगारंग कार्यक्रम श्री झूलेलाल मंदिर, दादाबाड़ी पर किया गया ।

दिनांक २८ जून २०२५, शनिवार को पावन दिवस पर श्री प्रेमप्रकाश आश्रम कोटा पर सांयकाल श्री गुरु महाराज जी जन्मोत्सव के उपलक्ष में छप्पन भोग, नन्हे बालकों द्वारा श्री गुरु महाराज जी के जन्मोत्सव एवं चालीहा महोत्सव की महिमा दर्शाती हुई नाट्य प्रस्तुति, झांकी दर्शन के साथ रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

दिनांक २९ जून २०२५, रविवार को श्री प्रेमप्रकाश आश्रम, श्रीपुरा-कोटा पर प्रातः १३९ ब्राह्मणों को ब्रह्मभोज, लगभग २२५ गरीब और असहाय माताओं को राशन वितरण के साथ दोपहर १२.०० बजे से आम भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने प्रेम भाव से भोजन प्रसादी ग्रहण की। इसी के साथ-साथ ही आश्रम पर प्रातः से ही निःशुल्क नेत्र एवं दंत रोग परामर्श शिविर आयोजित किया गया, जिसमें डॉ. सुरेश छाबड़ा (नेत्र रोग विशेषज्ञ एवं फेको सर्जन), डॉ. भारती छाबड़ा एवं डॉ. ट्विंकल चांगलानी (मुख एवं दंत रोग विशेषज्ञ) तथा डॉ. एच. एन. सोनी द्वारा शिविर में सेवाएं प्रदान की गई जिसके अंतर्गत १५७ नेत्र रोगियों एवं ८८ दंत रोगियों को निःशुल्क परामर्श और उपलब्ध दवाइयाँ प्रदान की गई।

सांयकाल में श्री गुरु महाराज जी जन्मोत्सव का रंगारंग कार्यक्रम रॉयल पाम कम्युनिटी हॉल, बजरंग नगर- कोटा पर किया गया।

दिनांक ३० जून २०२५, सोमवार को श्री प्रेमप्रकाश आश्रम, श्रीपुरा- कोटा पर प्रातः हवन यज्ञ की पूर्णाहुति, पूज्य श्री गुरु महाराज जी का पंचामृत से अभिषेक, पाठों का भोग, ध्वज वंदना, आरतियाँ, प्रसाद वितरण का कार्यक्रम किया गया।

सांयकाल कार्यक्रम के तहत महिला मण्डल, बालिका मण्डल और बाहर से आये हुए कलाकारों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया साथ ही महाआरती, दीप प्रज्वलन, महाप्रसादी भोग और केक काटकर जन्मोत्सव मनाया गया । पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज द्वारा ऑनलाइन पल्लव पाकर आचार्यश्री के जन्म महोत्सव की पूर्णाहुति संपन्न हुई।

कार्यक्रमों के दौरान सर्वश्री गुलशन माखीजा, रमेश साधवानी, संजय चावला (गोरखपुर), मोहित पुरसवानी एवं मीत माखीजा द्वारा रंगारंग भक्ति संगीत प्रस्तुत किया गया ।

इस जन्मोत्सव के सफल आयोजन में श्री प्रेमप्रकाश सेवा मण्डल, श्री प्रेमप्रकाश महिला मण्डल, श्री प्रेमप्रकाश बालिका मण्डल, श्री प्रेमप्रकाश युवा मण्डल द्वारा सक्रिय सहयोग प्रदान किया गया।

ब्यावर

नन्द नगर स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम जहाँ पर साईं टेऊँराम चालीहे की धूम ने सारे प्रेमप्रकाशी संसार को आकर्षित किया. संत शंभूलाल के सानिध्य में २६ से ३० जून तक जन्मोत्सव के पंचदिवसीय मेले में प्रेमीगणों ने खूब मौज मचाई । इस अवसर पर हवन-यज्ञ, श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद्भगवद् गीता के पाठ साहब रखे गये । अन्नक्षेत्र लगाकर राहगीरों को भोजन प्रसादी शरबत आदि का निरंतर वितरण चालीहा-जन्मोत्सव के खास आयोजन रहे. वानरभोज-गौसेवा भोज, कन्या भोज एवं दयालु सहायता जिसमें जरूरतमंद परिवारों को संत शंभूलाल द्वारा खाद्य सामग्री दी गयी । ब्रह्मधाम में बुजुर्गो एवं संतों का भोजन किया गया । सांई टेऊँराम बाबा की दिव्य झाँकी सजायी गयी प्रतिदिन बाल मण्डली द्वारा साईं टेऊँराम जीवन दर्शन पर आधारित लीलाओं के मंचन ने भी संगत को भक्तिरस से सींचा. ब्रह्मभोज, कन्याभोज में ब्राह्मणों व सैकड़ों कन्याओं को ससम्मान भोजन दक्षिणादि से तृप्त किया गया. महाआरती के अनुपम दृश्य का नज़ारा अविस्मरणीय रहा.

अमदाबाद

• सद्गुरु स्वामी टेऊँराम नगर, कोतरपुर में स्थापित तपोनिष्ठ युगपुरुष मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जी की भव्य दरबार में साईं टेऊँराम महाराज का १३९वां जन्मोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम से मनाया गया । जन्मोत्सव के तहत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। संत लक्ष्मण जी के सानिध्य में मनाये गये जन्मोत्सव मेले की शुरूआत परम्परागत पूजा-पाठ, प्रार्थना, पाठारम्भ से हुई. चालीहा महोत्सव में विशेष रूप से ४० दिन दीन- बंधुओं की सेवा, अन्नक्षेत्र प्रसादी का वितरण किया गया। पांच-दिवसीय जन्मोत्सव २६ जून से ३० जून २०२५ तक पूर्ण श्रद्धाभाव से मनाया गया । जिसमें विभिन्न स्थानों से संत-महात्मा, गुणी जन पधारे। पंच दिवसीय हवन यज्ञ अनुष्ठान - प्रेम प्रकाशेश्वर महादेव मंदिर में जलाभिषेक का आयोजन किया गया। विशेष कार्यक्रमों में ब्राह्मणों को भोजन, बहराणा साहिब, कन्याभोज, गुरु महाराज की जीवनी पर आधारित नाट्य प्रस्तुति, छप्पन भोग झांकी एवं अन्य मनमोहक झांकियां भी सजाई गई जो बहुत ही दर्शनीय रही ।छप्पन भोग झाँकी के

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

सेवा का जो कार्य है वह बहुत कठोर होता है जो योगियों को भी दुर्लभ मिलता है, इसे अपना कर्तव्य समझकर ही करना चाहिए।

अन्तर्गत सैकड़ों व्यंजन बाबा के समक्ष भोग के लिये प्रस्तुत किये गये. गुरु महाराज से आशीर्वचन लेकर पल्लव प्रार्थना कर मेले का समापन किया गया। समारोह में बधाई गीत एवं महाप्रसाद भोग लगाकर, साथ ही पधारे संत महात्मों को साधुवाद दिया। अंत में आम भण्डारे का आयोजन किया गया। जिसमें सभी प्रेमियों ने प्रसादी पायी।

कानपुर

कौशलपुरी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम की सुंदर छटा देखकर आगंतुक सैकड़ों प्रेमी आनन्दलोक में उड़ान भरने लगे. महाआनन्द प्रदान करने वाले जन्मोत्सव की शुरूआत २१ मई से ही संत भोलाराम के सानिध्य में साईं टेऊँराम चालीहा के साथ हो चुकी थी. ४० दिन विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। बहराणा साहेब, हवन-यज्ञ, प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता जिसमें बच्चों सहित बड़ो ने भी भाग लेकर बड़ा आनन्द प्राप्त किया। रंगोली-चित्रकला प्रतियोगिता में भगवान, गुरु महाराज के चित्र सभी ने बहुत सुंदर बनाए। कन्या भोज में सभी जाति के कन्याओं ने भाग लिया, जिसमें बालिकाओं को कापी, किताब, पेन, दिया गया। ब्राह्मण भोज, प्रभात फेरी, चालीसा पाठ, महाआरती, ४० दिन रात्रि ६ से १० चालीसा पाठ, भंडारा प्रसाद सेवा कार्य का आनंद रहा। १३६ व्यंजनों का भोग, गुरु महाराज जी के सुंदर नाट्य दर्शन प्रेमियों के मन को छू गए। बच्चों द्वारा भजन नृत्य आनंद,वृद्धजनों का सम्मान और भी कई सुंदर कार्य गुरु महाराज जी के जन्मोत्सव में संत भोलाराम जी के सानिध्य में हुए।

चैन्नई

चैन्नई स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम की सौन्दर्य छटा आचार्यश्री के जन्मोत्सव पर अनुपम रही. सन्त जीतूराम जी के सानिध्य में चैन्नई वासियों ने जन्मोत्सव का दिव्यानन्द लिया. पंचदिवसीय मेले में सैकड़ों भक्तों ने भाग लेकर अपना जीवन सफल किया. खास आयोजनों में कन्या भोज, ब्राह्मण भोज, ४० दिन नित्य अन्न दान का शुभ कार्य किया गया। सांई टेऊँराम के समक्ष फलों से एक सुन्दर झांकी सजायी गयी। इसी के साथ भजन-अन्ताक्षरी, आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। छप्पन भोग, महाआरती, केकप्रसादी, महाप्रसादी का सभी ने प्रसाद पाया।

इन्दौर

काटजू कॉलोनी स्थित स्वामी टेऊँराम दरबार की दिव्य ओजस्विता से प्रेमी भक्त आलोकित हो रहे थे- श्रीमंदिर सहित समूचा दरबार परिसर चमचमा रहा था और प्रेमियों की प्रसन्नता का तो कोई पारावार ही नहीं था। मुख्य तौर पर कन्या भोज, वृद्धों की सेवा, गौसेवा के कार्यक्रम खास रहे। हवन-यज्ञ, महाआरती के दिव्य नज़ारे जिसमें सैकड़ों भक्त दीप थाली द्वारा अपने साईं टेऊँराम बाबा की आरती कर रहे थे. बाल मण्डली द्वारा साईं टेऊँराम बाबा की लीलाओं का मंचन सराहनीय रहा. संतो, ब्राह्मणों का भण्डारा भी किया गया. अंतिम दिवस पर आम भण्डारे के अलावा, छप्पन भोग झाँकी, महाप्रसादी, केकप्रसादी आदि नज़ारों के दर्शन हुए. दीप प्रकाश से तो नित्य ही दरबार परिसर झिलमिला रहा था. आश्रम के बाहर अन्नक्षेत्र में पाँचों दिन शरबत-पोहा आदि का वितरण दिन भर होता रहा. जन्मोत्सव का समापन साईं टेऊँराम मंगलगान पर नाचते- झूमते हुए हुआ.

धमतरी

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम नगर स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम को भव्यता के साथ शृँगारित किया गया था. सैकड़ों की संख्या में भक्तजन भी रंग रंगीले वस्त्र धारण कर संत लोकेश के साथ जन्मोत्सव में आनन्दलोक की ओर चल पड़े. इसके पूर्व सांई टेऊँराम चालीसा पर ४० दिनों तक प्रतिदिन विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये। प्रतिदिन प्रेमियों द्वारा चालीसा का पाठ किया गया। जन्मोत्सव के पांच दिन विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। मेले का शुभारम्भ श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद्भगवद् गीता के पाठारम्भ के साथ हुआ। प्रतिदिन प्रातः एवं सायंकाल को धमतरी नगर के अन्य गुरुद्वारों टिकाणों के संत साधुओं द्वारा सत्संग ज्ञानयज्ञ का प्रवाह हुआ। विशेष रूप से १००० पाइनापल की झांकी सजाई गयी। आचार्यश्री के जन्मोत्सव के प्रारम्भ के साथ साथ भगवान जगन्नाथ स्वामी की पावन रथयात्रा का भी सुअवसर था यह संयोग सदगुरु स्वामी टेऊँराम बाबा एवं भगवान जगन्नाथ स्वरूप श्री हरि के परम स्नेह को इंगित करता है इस सुअवसर पर भगवान के दर्शन के लिए दूर दूर से धमतरी क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों से आकर भगवान के रथ को खींचने के लिए आतुर भक्तों के लिए भण्डारे की व्यवस्था श्री प्रेम प्रकाश आश्रम परिवार द्वारा की गई जिसमें ७००० से भी अधिक भक्तों ने भगवान जगन्नाथ के द्वारा भोग लगा हुआ पुलाव एवं दाल भोजन प्रसाद पाया। नमकीन लस्सी, कोल्ड ड्रिंक भी ग्रहण की। इस पुनीत कार्य में स्वामी टेऊँराम बाबा के १०० से भी अधिक भक्त महिला पुरुष एवम् बच्चे सभी बड़े ही सेवा भाव से पूर्ण तन्मयता के साथ सेवा करते दिखे जिसके कारण इतना बड़ा आयोजन सफल हुआ। स्वामी टेऊँराम अन्न क्षेत्र में हजारों की संख्या में संगत ने प्रसादी ग्रहण की। विशेष कार्यक्रम में १३६ कन्याओं को भोजन कराकार उपयोगी वस्तुएं प्रदान की गयी।भजन अंताक्षरी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी खास रहा। गौशाला में गौमाता की सेवा एवं वृद्धजनों की सेवा का कार्य भी किया गया। १३६ व्यजंनों का भोग आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के समक्ष लगाया गया। अंतिम दिवस प्रातःकाल हवन

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश जिस किसी को भी प्रभु परमात्मा का सच्चा प्रेम लग जाता है, तो फिर उसको जाति-पाति और वर्णाश्रमों के सुदृढ़ बन्धन भी कभी बांध नहीं सकते।

यज्ञ का आयोजन हुआ । सायं काल को सत्संग उपरांत १३६ दीप प्रज्जवलित कर केक काटकर बाबा के जन्मोत्सव की मौज मचायी । अंत में महाभंडारे का आयोजन कर कार्यक्रम को विराम दिया गया ।

डबरा

ढीमरपुरा स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम में संत छोटूराम की सानिध्यता में २१ मई से ही चालीहा व्रत द्वारा सैकड़ों प्रेमियों ने आनन्दलोक यात्रा में रवानगी कर दी. आनन्दोत्सव के इन चालीस दिनों में हर शनिवार को विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ. २६ जून को संतों के साथ प्रेमी हवन-यज्ञ करके जन्मोत्सव के इस आनन्दमेले को मनाने लगे. इस मेले में प्रेमियों ने देवी-देवताओं के मध्य विराजित सद्गुरु साईं टेऊँराम बाबा के दर्शन किये (झाँकी सजाई गई थी). विशेष कार्यक्रम में ५६ भोग, दीप प्रज्जवलन, कन्या-भोज, वृद्धजनों की सेवा, गौमाता सेवा आदि कार्यक्रम रहे । सद्गुरु साईं टेऊँराम बाबा के जीवन दर्शन पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम भी अत्यंत सराहनीय रहे । १३६ केक जो आकार-प्रकार में भिन्न भिन्न थे, का भी भोग लगाया गया. अंत में भण्डारे की महाप्रसादी में सभी ने प्रसाद पाया ।

गांधीधाम

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का १३६ वां जन्मोत्सव २६ से ३० जून तक संत कमल के सानिध्य में प्रेम प्रकाश आश्रम, गांधीधाम में बड़े ही धूमधाम से मनाया गया । मेले की शुरुआत प्रथम दिवस प्रातः परम्परागत रूप से श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ एवं गीता माता के पाठों का आरंभ, सत्संग, आरतियाँ कर की गयी । प्रतिदिन प्रातःकाल एवं सायंकाल सत्संग की मौज मची रही । शहर के समस्त ब्राह्मण समाज को भोजन आदि से तृप्त कर यथायोग्य दक्षिणादि देकर सम्मान किया गया । महाआरती का विशेष आयोजन अत्यन्त ही दर्शनीय रहा । कन्या भोज में कन्याओं को भोजन एवं जरूरत की सामग्री वितरित की गयी । मंद बुद्धि हॉस्पिटल में भोजन की व्यवस्था की गयी । गौशाला में गौमाता के लिये सामग्री की व्यवस्था की गयी । स्वामी टेऊँराम अन्न क्षेत्र के अंर्तगत प्रतिदिन पुलाव-शर्बत-छाछ का वितरण किया गया । प्रतिदिन गुरु महाराज के विग्रहों को नूतन वस्त्राभूषण श्रृंगार से अलंकृत किया गया । १३६ व्यंजनों की विशाल मनमोहक झांकी दर्शन, जिसमें प्रत्येक व्यंजन को अलग प्रकार के गिफ्ट पैक मे सुसज्जित करना विशेष रूप से अपनी ओर आकर्षित कर रहा था । आश्रम की सजावट भी अपने आप मे विशेष आकर्षण का केंद्र रही, भिन्न भिन्न पुष्प मालाओं से प्रतिदिन श्री मंदिर का श्रृंगार अद्भुत एवं नेत्रों को अपनी ओर आकर्षित किये जा रहा था । पांचों दिन आम भंडारे में हजारों प्रेमियों ने प्रसाद पाया । जन्मोत्सव दिवस-प्रातः काल पाठों का भोग, सत्संग, आरती सांयकाल सत्संग, १३६ दीप प्रज्वलन, केक भोग, बधाई गीत तत्पश्चात आम भंडारा के बाद जन्मोत्सव मेले की समाप्ति की गयी ।

दिल्ली

मलकागंज स्थित श्री प्रेम प्रकाश धाम में साईं टेऊँराम जन्मोत्सव २६ से ३० जून तक बड़े ही भक्तिभाव के साथ मनाया गया । संत टेकचन्द एवं संत देव के सानिध्य में साईं टेऊँराम बाबा के जन्मोत्सव का उत्साह प्रेमियों में देखते ही बनता था. इस मौके पर आश्रम भवन व श्रीमंदिर की सुंदरतम शोभा भी इन्द्रलोक समान प्रतीत हो रही थी. सदगुरु महाराज जी के जन्मोत्सव पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए, इस अवसर पर पंच दिवसीय कार्यक्रम में पहले दिन श्रीमद् भागवत गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठों का आरंभ हुआ, एवं गौसेवा का कार्यक्रम, भगवान शिव की झांकी विशेष तौर पर बहुत ही मनमोहक रही। इस पुनीत अवसर पर हवन-यज्ञ का आयोजन भी किया गया । भजन अंताक्षरी, महा आरती, बधाई गीतों पर ढोल वादन के साथ नाचते-झूमते भक्तों ने परस्पर बधाई देते हुए आम भण्डारे में भोजन प्रसाद पाया. केकप्रसादी छप्पन भोग भी अर्पित किये गये साईं टेऊँराम बाबा के समक्ष. १ जुलाई को परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज जी के सानिध्य में जन्मोत्सव की मौज मची । इस सुअवसर सद्गुरु महाराज जी की लीला का वर्णन एवं बच्चों द्वारा नृत्य-गायन-भजन प्रस्तुति, छप्पन भोग, दीपोत्सव, केक काटकर, बधाई गीत गाये गये एवं पूज्य महाराजश्री द्वार पल्लव पाकर जन्मोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न किया गया । अंत में महाप्रसादी का आयोजन किया गया । जिसमें सैकड़ो प्रेमियों ने प्रसाद पाया । इस अवसर पर दिल्ली एवं आस पास के प्रेमियों सहित समालखा, फरीदाबाद एवं अन्य शहरों से भी प्रेमीगण शामिल हुए ।

नसीराबाद

प्रेम प्रकाश मण्डल के आधार स्तंभ युगपुरुष मंगलमूर्ति आचार्य सत्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन जन्मोत्सव की धूम नसीराबाद के घर घर में मची। २१ मई से शुरू हुए चालीसा उत्सव में प्रेम प्रकाश मण्डली नसीराबाद एवं प्रेमियों द्वारा घर घर में चालीसा पाठ का आनंद हुआ।चालीस दिवसीय उत्सव में कई सारे भक्तों ने प्रतिदिन दरबार के दर्शन अथवा चालीस दिवसीय व्रत अनुष्ठान के नियम की प्रतिज्ञा ली। पंच दिवसीय वर्सी उत्सव में सेवा के कई सारे कार्य हुए जिसमें :- गौ सेवा, अन्न क्षेत्र सेवा, दीनबंधु सेवा जैसे कार्य हुए।साथ ही साथ स्वामी जीवन मुक्त जी महाराज का पावन ४६वां वर्सी उत्सव पूज्य गुरुवर सत्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में ३० मई को मनाया गया। गुरु बाबा के प्रवचनों की ज्ञान गंगा में डुबकी लगाने के बाद सभी भक्तों के लिए भोजन भण्डारे का आयोजन हुआ। सप्त दिवसीय जन्मोत्सव में अनेकों कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सप्त दिवसीय कार्यक्रम में सातों दिन नगर के पाँच बत्ती चौराहे पर

अन्नक्षेत्र की सेवा का आयोजन हुआ, जिसमे कभी सब्जी पूड़ी, दाल पकवान, पुलाव, तो कभी पोहा का प्रसाद वितरित किया गया। प्रथम दिवस पाठ साहिब के आरंभ के बाद पावन अमावस्या के मोके पर कन्याओं का महा भोज हुआ जिसमें कन्याओं को विशेष उपहार व दक्षिणा देकर विदा किया गया। दूसरे दिन शाम को विशाल रथ यात्रा का आयोजन हुआ जिसमे आचार्य श्री के चित्र को सुंदर सुसज्जित विशाल रथ में विराजमान कर सम्पूर्ण नगर का भ्रमण हुआ। संपूर्ण यात्रा में प्रेमी गण गुरु बाबा के भजनों पर नाचते झूमते चल रहे थे। यात्रा के मार्ग पर प्रेमियों द्वारा पुष्प वर्षा कर, पुष्प के हारों द्वारा स्वागत कर प्रसाद वितरित किया गया। तीसरे दिवस पर शाम सिन्धी समाज के इष्टदेव भगवान श्री झूलेलाल साईं का पूज्य बेहराणा साहिब का आयोजन हुआ। ज्योत साहिब के दर्शन कर सभी ने अखा पाकर प्रार्थना की सिन्धी छेज का आयोजन हुआ। चौथे दिन महाआरती का आयोजन हुआ । कई सारे प्रेमियों व छोटे बच्चो द्वारा आरती की थाली सजाई गई थी । सर्वोत्तम ४ आरती की थालियो कों पुरस्कृत कर सम्मान किया गया। पाँचवे दिन पूज्य गुरुवर सतगुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने अपने आशीर्वाद स्वरूप संत श्री हरिओमलाल जी(ग्वालियर) एवं भगत माणिकलाल जी को (अजमेर वैशाली नगर) से सत्संग प्रवचन के कार्यक्रम के लिए भेजा। संतों के सानिध्य में सत्संग प्रवचन के पश्चात छप्पन तरह के व्यंजनों का भोग श्री गुरु महाराज जी को लगाया गया। छटें दिन आचार्य श्री के पावन जन्मोत्सव के दिन प्रातः काल अमृत वेला में हवन यज्ञ अनुष्ठान हुआ जिसमें पधारे सभी प्रेमियों ने श्रद्धा एवं भाव से आहुतिया डाली। शाम को जन्मोत्सव के उपलक्ष में भजन अंताक्षरी का कार्यक्रम हुआ । तत्पश्चात् छोटे छोटे बालक बालिकाओं द्वारा सुंदर सुंदर भजनों पर नृत्य प्रस्तुत किए। एवं बड़े बालकों व बालिकाओं द्वारा गुरु महाराज की जीवन पर आधारित नाटक का मंचन किया व संपूर्ण सतगुरु टेऊँराम चालीसा पाठ को नाटक के रूप में बच्चो द्वारा दर्शाया गया। सभी बच्चो को सातवें दिन संतों द्वारा आशीर्वाद स्वरूप पुरस्कार व पखर प्रदान की गई।जन्मोत्सव के सातवें व आखिरी दिन संत श्री हरिओमलाल जी एवं भगत माणिकलाल जी के सानिध्य में प्रातः काल सत्संग सभा का आयोजन हुआ एवं शाम को कथा भजन के पश्चात संतों द्वारा भजन सत्संग का आनन्द हुआ एवं आरती थाली सजाओ प्रतियोगिता में विजयी प्रतियोगियों को एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले बालक बालिकाओं को पखर दे पुरुस्कृत कर सम्मानित किया। एवं जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में रखे पाठो का भोग पाकर आरती की गई एवं दीप प्रज्वलित किए गए एवं जन्मोत्सव का आनंद हुआ। अंत में सभी प्रेमियों के लिए विशाल शाही भण्डारे का आयोजन हुआ।

खैरथल

रेतीले टीले के ऊपर स्थापित श्री प्रेम प्रकाश आश्रम तो हर समय दिव्य छटा से आलोकित रहता ही है, लेकिन साईं टेऊँराम चालीहा- जन्मोत्सव की बात ही कुछ और है. इन दिनों तो साईं टेऊँराम दरबारों के दिव्य आलोक से उस मार्ग से गुजरने वालों के हृदय भी रोशन हो रहे थे. संत हरिलाल व संत उमेशलाल के सानिध्य में २१ मई से ही साईं टेऊँराम अवतरण चालीहे का उत्सव पूजा-आराधना के साथ शुरू हो गया. सत्संग सभालय के चारों ओर चालीस दिन करीने से सजाई गई दीपमाला के अनुपम नज़ारे ने सबको भावभक्ति से भर दिया. छप्पन भोग झाँकी, महाआरती के खास नज़ारों ने भी प्रेमियों की गुरुदेव के प्रति प्रेमाभक्ति को प्रगाढ़ ही किया. कन्याओं तथा ब्राह्मणों को स्नेहपूर्वक भोजन भण्डारा खिलाकर यथेष्ठ दक्षिणादि उपहार दिये गये. रक्तदान शिविर का आयोजन भी इस अवसर पर किया गया ।आम भण्डारा में हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण कर अपना जीवन सफल किया.

मुरैना

पूर्व परम्परानुसार इस वर्ष भी सद्गुरु टेऊँराम जन्मोत्सव मेले का आयोजन अमरापुरवासी श्री वसणाराम तलरेजा जी के निवास स्थल पर उनके परिवारजनों द्वारा बड़े ही धाम धूम से किया गया. प्रतिदिन दीपोत्सव, अंतिम दिवस हवन यज्ञ भी किया गया. इसके बाद प्रेमप्रकाशी प्रेमियों के साथ सैकड़ों लोगों को भोजन भण्डारा बड़े ही प्रेमभाव से खिलाया गया. श्री प्रेम प्रकाश आश्रम में भी ३० जून को जन्मोत्सव के अन्तर्गत रखे गये पाठों का भोग पारायण संत प्रतापलाल जी के सानिध्य में हुआ. केकप्रसादी, दीप प्रज्वलन के नज़ारों के साथ भण्डारा भी किया गया.

सीकर

पोलो ग्राउंड स्थित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में संत महेशलाल जी के सानिध्य में आचार्यश्री का १३९वां जन्मोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया । गुरुभक्त सेवाधारियों के साथ सीकर के सिंधी समाज ने बड़ी संख्या में पहुँचकर सद्गुरु टेऊँराम जन्मोत्सव का आनन्द लिया. पंचदिवसीय श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं गीता माता के पाठाराम्भ के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई । कोटा के कलाकार लख्मीचन्द कव्वाल के द्वारा विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया । झांकी दर्शन, छप्पन भोग एवं दीप प्रज्जवलन का कार्यक्रम विशेष रहा । शहर में अन्नक्षेत्र स्टॉल लगाकर आम जनता को प्रसाद वितरण किया गया । सद्गुरु टेऊँराम जन्मोत्सव पर आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया. साईं टेऊँराम चालीहा की धूम भी यहाँ पर बहुत ही आनन्ददायक रही.

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी इस कलयुग के समय में संतो के संग द्वारा ही संसार के भवसागर को पार कर सकते हैं।

नागपुर

जरी पटका में स्थापित स्वामी टेऊँराम दरबार में प्रेमियों ने बड़े ही हर्षित मन-हृदय से साईं टेऊँराम जन्मोत्सव मनाया. ३० जून अवतरण दिवस की प्रातः से देर रात्रि तक मेला लगा रहा. नगर के सिंधी साधु संत समाज व झूलेलाल मण्डली द्वारा कीर्तन-उपदेशामृत की वर्खा की गई. जन्मोत्सव पर रंगोली, दीपमाला, छप्पन भोग आदि के नज़ारे भी खास रहे. रात्रि में आम भण्डारे की व्यवस्था भी सराहनीय रही.

लखनऊ

गोलागंज स्थित स्वामी टेऊँराम दरबार में संत भोलाराम के साथ बड़ी संख्या में भक्तों ने साईं टेऊँराम जन्मोत्सव को मनाया. इस अवसर पर हवन-ध्वजावंदन एवं पाठों का भोग साहब हुआ । छप्पन भोग, दीपज्योति प्रकाश, केकप्रसादी के कार्यक्रम खास हुए. आम भण्डारें का आयोजन भी किया गया । खुशी के गीत गाते झूमते हुए मौजानन्द हुआ.

अयोध्या

रामनगर कॉलोनी स्थित श्री प्रेम प्रकाश सांई टेऊँराम दरबार में सांई टेऊँराम चालीसा का समापन एवं पूज्य आचार्य श्री का जन्मोत्सव छप्पन भोग लगाकर व १३९ दीप जलाकर किया गया । इस अवसर पर सांई भावनदास व सांई महेन्द्र लाल ने भजन गाकर श्रद्धालुओं को निहाल कर दिया ।

आगरा केदार नगर

बाबा टेऊँराम के जन्मोत्सव में हवन-यज्ञ, ध्वजावंदन व साईं टेऊँराम संकीर्तन का आनन्द लिया भक्तों ने दीदी भगवंती देवी के साथ. पाँचों दिन भोजन भण्डारे का आनन्द भी रहा. खास आयोजनों में भव्य सांस्कृतिक मंचन में साईं टेऊँराम बाबा के जीवन प्रसंगों को सजीव किया आश्रम के ही बाल युवा मण्डली ने. छप्पन भोग झाँकी, महाप्रसादी, केकप्रसादी, महाआरती के नज़ारे भी खास रहे.

उल्हासनगर–3

उल्हासनगर-३ के सेक्शन-१७ स्थित उमा एपार्टमेंट में स्थापित श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली के श्रीमंदिर में २६ से ३० जून तक मनाये गये पंच दिवसीय जन्मोत्सव मेले में साईं टेऊँराम संध्या का विशेष आयोजन हुआ जिसमें छोटे-छोटे बच्चों ने भी सद्गुरु टेऊँराम महाराज जी की महिमा का गुणगान किया. इस मौके पर १३९ दीपों का प्रकाश हुआ, छप्पन भोग, केकप्रसादी, महाप्रसादी व आम भण्डारा भी हुआ.

स्पेन

लासपालमास सहित स्पेन के अन्य नगरों में स्थापित प्रेम प्रकाश मंदिरों में भी साईं टेऊँराम जन्मोत्सव अलग-अलग तिथियों में मनाया गया. इस अवसर पर सांई टेऊँराम की महिमा का गुणगान किया गया । सांई टेऊँराम की जीवन लीला पर आधारित एक सुन्दर लीला का मंचन यहां किया गया । महाआरती, छप्पन भोग, दीप प्रज्जवलन का कार्यक्रम विशेष रहा । जन्मोत्सव के दिन एक और लीला का मंचन किया गया । बधाई गीत एवं नाच गाने के साथ जन्मोत्सव का समापन हुआ ।

अमेरिका

अमेरिका न्यूयार्क स्थित श्री प्रेम प्रकाश हिन्दू मन्दिर में सांई टेऊँराम बाबा का १३९वां जन्मोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ संत नरेशलाल एवं संत लक्खीराम के सानिध्य में मनाया गया. इस अवसर पर भगवान श्री झूलेलाल का बहराणा साहिब का आयोजन, आध्यात्मिक प्रश्नोत्तर एवं भजन अंताक्षरी का आयोजन भी खास रहा। सांई टेऊँराम बाबा की महाआरती, छप्पन भोग आयोजन भी अद्भुत रहा । ३० जून अवतरण दिवस की संध्या को पंचदिवसीय पाठों का भोग साहब एवं चालीसा पाठ के समापन के बाद जन्मोत्सव की मौज मचायी गयी । १३९ दीपों का प्रज्जवलन एवं केक काटकर बधाई गीत गाकर सभी ने एक दूसरे को बधाईयां दी । इसके बाद आरती कर पल्लव पाकर कार्यक्रम का समापन किया गया ।

टोक्यो

जापान के टोक्यो शहर में नवनिर्मित श्री प्रेम प्रकाश मन्दिर में सांई टेऊँराम बाबा का १३९वां जन्मोत्सव बड़े ही धूमधाम के साथ प्रेमियों द्वारा मनाया गया. सांई टेऊँराम बाबा की महाआरती कर केक काटकर जन्मोत्सव मनाया गया ।दीप प्रज्जवलन कर बधाई गीत गाकर सभी ने एक दूसरे को बधाईयां दी । इसके बाद आरती कर पल्लव पाकर कार्यक्रम का समापन किया गया ।

इसी प्रकार देश-विदेश के अनेक शहरों में सांई टेऊँराम बाबा के १३९वें जन्मोत्सव का कार्यक्रम बड़े ही धूमधाम से मनाया गया । विश्लेषण के अनुसार देश दुनिया के २५० से अधिक शहरों में प्रेम प्रकाश आश्रमों, मंदिरों, झूलेलाल मंदिरों, सिंधी गुरुद्वारों सहित अनेक धर्मशालाओं में सद्गुरु टेऊँराम जन्मोत्सव का आनन्द रहा.

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

आचार्य द्वारा चलाई गई प्रथा ही परम्परा कहलाती है वह शास्त्रों के आधार पर होती है । जो कोई शिष्य अपने आचार्य की परम्परा को ज्यों का त्यों बनाये रखता है उसको ही गुरुभक्त कहते हैं ।

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के 139वें जन्मोत्सव की चित्रमय झलकियां

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

राम-नाम का भजन करने से मनुष्य में परम उदारता व परोपकार के गुण अनायास ही आ जाते हैं।

सद्गुरु टेऊँराम 139 जन्मोत्सव
फूल बंगला झांकी दर्शन
S.M.R

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

परमात्मा सर्व शक्तिमान हैं। उनके लिये कुछ भी असम्भव नहीं है। इसलिए उनकी शरण लें तो आपके दुःख दर्द दूर हो जायेंगे।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

माता-पिता से मांगने वालों को भिखारी नहीं कहते,
पर दूसरों से मांगने वाले को फकीर या भिखारी कहा जाता है।

धामतरी

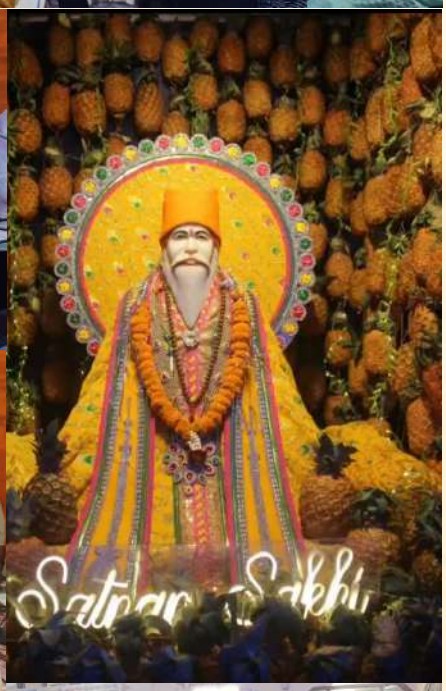

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश मोहरूपी घोर अन्धकार को नाश करने के लिये आत्म–ज्ञान रूपी दीपक की ही आवश्यकता होती है। यह आत्म–ज्ञान रूपी दीपक ब्रह्मनेष्ठी और ब्रह्मक्षोत्रिय देहधारी सद्गुरु ही दे सकता है।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश जिस गंदे शरीर पर गर्व करते हो वह तो एक दिन मिट्टी में मिल जायेगा।

बैंकाक

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी मुझे कुछ चाहिए ही नहीं, केवल इतनी बात से मुक्ति हो जायेगी।

सद्गुरु टेऊँराम छठी भजन

तर्ज : मुंबई से आया मेरा दोस्त.....

थल : खण्डूअ में आयो अवतारु, भेनरु वाधायूं ड्यो।
संतनि जो आयो सरदारु, भेनरु वाधायूं ड्यो।।

1. कृष्णा जो लाल दुलारो, पुटु चेलाराम जो प्यारो।
आखाड़ चोथीअं ते जाओ, संगति सजिअ जो सहारो।।
आयो सदोरो शनिवारु..., भेनरु.....

2. सत्गुरु जी सूरत आ प्यारी, अचे दर्शन सां दिल खे बहारी।
गोकुल में आयो गिरधारी, गद् गद् थिया नर नारी।।
मोहन मिठो आ मनठारु..., भेनरु.....

3. पुटड़े जी ड्यिण वाधाई, भंभुरे शहर मां आई।
नानी आ शामिल बाई, गड नानो मूल चन्द भाई।।
बलि बलि वञनि बलिहार..., भेनरु.....

4. अजु आ छठीअ जी तैयारी, संगति आई गड्जी सारी।
वेठी अची स्वाल दाई, जै राम मिसिरु वीचारी।।
नालो टेऊँराम गमटारु..., भेनरु.....

5. घर-घर वरियूं वाधायूं, घड़ियूं सदोरियूं अजु आयूं।
सत्गुरु खे झूलो झुलायूं, लोलियूं ऐं लाड़ा गायूं।
'मनोहर' मनायूं जै जै कारु..., भेनरु.....

–स्वामी मनोहरप्रकाश जी महाराज

तर्ज: दिल लुटने वाले जादुगर ...

थलु: मुहिंजो सतगुरु खण्डुअ वारो आ,
जेको प्रेमिनि जो त प्यारो आ ।
अजु छठी उन्हीअ जी मनायूं था,
जेको संतन मे सोभारो आ ।।

1. जहिंजी माता कृष्णा देवी आ,
पिता चेलाराम सन्त सेवी आ ।
जहिंजी अमरापुर दरबार आहे,
जणु स्वर्गपुरी जो द्वारो आ ।।

2. गुरुदेव मुहिंजो गमटार आहे,
ऐं शंकर जो अवतार आहे ।
जहिंजी मूरत चंडु खा सुहिणी आ,
जेको मन खे मोहिण वारो आ ।।

3. सजी संगत छठी मनाए पई,
ऐं गीत खुशीअ जा गाये पई ।
नालो 'टेऊँराम' बुधाये पई,
जहिंजो जग मे जय, जयकारो आ ।।

तर्ज: सज रही मेरी अम्बे मां....

थलु:
झूल रहे साई टेऊँराम, सुनहरे पलने में, चन्दन के पलने में ॥

1. बाल रूप अवतार धार आये, खण्डू नगर में खुशियां छाये। झूम रहे नर और नार, सुनहरे पलने में.....

2. बाल रूप बन मन मुस्काय, मुदित हो मन हृदय अकुलाये। प्रसन्न भये पालनहार, सुनहरे पलने में....

3. माता कृष्णा फूली न समाये, खुशी-खुशी में गीत सो गाये, दर्शन करे अवतार, सुनहरे पलने में....

4. देवी-देव सब रूप धार आये, दर्शन कर सब सुख को पाये, वारि-वारि जाये बलिहार, सुनहरे पलने में..

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

परम शांति के बिना जीवन का वास्तविक सुख संभव नहीं और वह शाश्वत् सत्य और नित्य प्राप्त तत्व से ही संभव है।

गुरु पूर्णिमा विशेष

देवो रुष्टे गुरुस्त्राता गुरु रुष्टे न कश्चन:। गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता न संशय:॥

देवता (भाग्य) रुठ जाए तो गुरु (आचार्य, ब्राह्मण) रक्षा करता है, यदि गुरु रुठ जाए तो कोई नहीं बचाता। अत: गुरु ही रक्षक है, गुरु ही रक्षक है, गुरु ही रक्षक है। इसमें कोई सन्देह नहीं।

वन्दे अमरापुर स्थान वसुन्धराम्....वन्दे अमरापुर स्थान वसुन्धराम्....

छदे आलस थीउ मन त्यार रे, हलु अमरापुर दरबार रे ।
हलु सत्गुर जी दरबार रे ।
छदे आलस थीउ मनु त्यार रे, हलु अमरापुर दरबार रे ।

अमरापुर में अखिनि जो तारो, सत्गुर टेऊँराम प्यारो ।हरे राम....
हली तहिंजों करि दीदार रे, हलु अमरापुर दरबार रे....हलु...
छदे आलस थीअ मनु त्यार रे, हलु अमरापुर दरबार रे ।

अमरापुर में करे सणाई सत्गुर सर्वानन्दु सुखदाई ।हरे राम....
करे दर्शन संकट टार रे, हलु अमरापुर दरबार रे....हलु....
छदे आलस थीउ मनु त्यार रे, हलु अमरापुर दरबार रे ।

अमरापुर में रहे निमाणो, सत्गुर शांतिप्रकाश स्याणो ।हरे राम....
कंदो बेड़ा तुहिंजा पार रे, हलु अमरापुर दरबार रे....हलु...
छदे आलस थीउ मनु त्यार रे, हलु अमरापुर दरबार रे ।

अमरापुर में आ सुखकारी, सत्गुर हरिदासराम उदारी।हरे राम....
करे दर्शन दिलड़ी ठारि रे, हलु अमरापुर दरबार रे....हलु...
छदे आलस थीउ मनु त्यार रे, हलु अमरापुर दरबार रे ।

अमरापुर जोगिनि जा देरा, जन्म-मरण जा कटजनि फेरा ।हरे राम...
जितां मिलन्दो सतकर्तार रे, हलु अमरापुर दरबार रे....हलु...
छदे आलस थीउ मनु त्यार रे, हलु अमरापुर दरबार रे ।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश जो तत्ववेत्ता महात्मा हैं, वे बह्म के स्वरूप है। उनकी वाणी चाहे किसी भी भाषा में हो वह वेद के समान है और जिज्ञासुओं के भ्रम संशयो को दूर कर उनका उद्धार करती है।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव सआनन्द सम्पन्न

जयपुर। आस्था के पावन केंद्र श्री अमरापुर स्थान जयपुर में बुधवार १० जुलाई को गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व हाजरां हजूर सतगुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के पावन सानिध्य में बड़े ही भक्ति भाव के साथ मनाया गया। प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में 'श्री मन्दिर' में आचार्य श्री सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सतगुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज, सतगुरू शान्ति प्रकाश जी महाराज, सतगुरू हरिदासराम जी महाराज, भगवान लक्ष्मी नारायण, लड्डू गोपाल जी आदि के श्री विग्रहों की विधिवत पूजा अर्चना कर नवीन पोशाक धारण करवाकर आरती की गई। विशेष सुंदर पुष्प एवं मालाओं से आचार्य श्री एवं लक्ष्मी नारायण लड्डू गोपाल का श्रृंगार कर मिष्ठान फल एवं सूखे मेवे अर्पित किए गए। नित्य नियम प्रार्थना के पश्चात संत महात्माओं ने गुरु महिमा का गुणगान किया । परम पूज्य हाजरां हजूर सतगुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अमृतवाणी में भक्ति का रसपान हुआ।

पूज्य महाराजश्री जी ने अपनी ओजस्वी वाणी में गुरु की महिमा का गुणगान करते हुए बताया कि गुरु अंधकार में वह दीपक है जिस के प्रकाश से कठिन मार्ग भी सहज लगते हैं। साधक का पहला कार्य गुरु की मूर्त का ध्यान करना है। गुरु ही ब्रह्मा गुरु ही विष्णु और गुरु ही महेश है और गुरु ही हमें इस भवसागर से पार लगाते हैं। आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अपने गुरु की सेवा कर परम पद को प्राप्त किया था।श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का महापर्व वार्षिक चैत्र मेला जो इस वर्ष महाकुम्भ के कारण मुख्य कार्यक्रम हवन एवं ध्वजा वन्दन गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर आयोजित किया गया । आचार्य श्री के विग्रह की मंदिर परिक्रमा की गई साथ ही हवन-यज्ञ अनुष्ठान एवं ६० फीट ऊंचे शिखर पर प्रेम प्रकाशी ध्वजा लहराई गयी। कार्यक्रम में उपस्थित हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री एवं पूज्य गुरुवर की पूजा अर्चना कर भंडारे का महाप्रसाद ग्रहण किया। गुरु पूर्णिमा के इस पावन उत्सव में जयपुर सहित देश विदेश से आए हजारों श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री की पूजा कर गुरुदेव का दर्शन दीदार किया। भक्तो द्वारा नारियल, मिश्री, माला आदि से 'श्री गुरुदेव' का पूजन किया गया ! श्री मंदिर में पुष्पों का विशेष श्रृंगार किया गया!! दिन भर भक्तो का दर्शनों के लिए तातां लगा रहा !!

इसी प्रकार देश के अन्य शहरों में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रमों पर भी गुरु पूजा का पावन पर्व बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश जिसको गुरु कृपा का कण मिल जाता है, उसकी समस्त क्रियाएँ बदल जाती हैं।

गुरु पूर्णिमा पर्व पर विधानसभा स्पीकर ने स्वामी भगतप्रकाश महाराज से लिया आशीर्वाद

जयपुर। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर राजस्थान विधानसभा स्पीकर, श्री वासुदेव देवनानी ने श्री अमरापुर स्थान जयपुर पर आकर श्री मंदिर के दर्शन कर परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया । साथ ही जिला अध्यक्ष अमित गोयल, किशनपोल विधायक प्रत्याशी चंद मोहन भटवाड़ा सहित पधारे मुख्यमंत्री प्रतिनिधि मण्डल ने पावन श्री अमरापुर स्थान के दर्शन कर पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज को माल्यापर्ण कर आशीर्वाद प्राप्त किया । विधानसभा अध्यक्ष एवं प्रतिनिधि मण्डल ने संत श्री मोनूराम जी से आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की जीवनी एवं उनकी वाणी पर विस्तृत चर्चा की ।

गुरु पूर्णिमा पर पत्र के माध्यम से मुख्यमंत्री ने लिया गुरु जी का आशीर्वाद
मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि मंडल ने मंदिर के दर्शन कर फल प्रसाद किया अर्पण

जयपुर। गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर राजस्थान के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय श्री भजनलाल शर्मा द्वारा प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष हाजरां हजूर सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया । पत्र के माध्यम से मुख्यमंत्री ने गुरु महाराज जी के चरणों में वंदन कर शुभ आशीष मांगा एवं राज्य की उत्तरोत्तर उन्नति के लिए मार्गदर्शन की अभिलाषा व्यक्त की जिससे राज्य विकास की और निरंतर अग्रसर हो सके। आपका आशीर्वाद और प्रेरणा मिलती रहे !!

मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि मंडल द्वारा श्री अमरपुर स्थान जयपुर में श्री मंदिर एवं समाधी साहब का दर्शन कर फल, मिष्ठान, नारियल प्रसाद अर्पण किए।

श्री गुरु महाराज जी एवं संत मंडल द्वारा प्रतिनिधि मंडल को शुभ आशीर्वाद दिया।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

भगवान के कृतघ्न नहीं बनें। उनकी कृपा के लिए बार-बार उनके आभार मानें। उन्होंने आपको जो कुछ भी दिया है उस पर प्रसन्नचित्त होकर रहें।

गुरु पूर्णिमा पर विशेष

पावन प्रेरणादायक प्रसंग

सेवा का बड़ा महत्व होता है। सेवा भी एक प्रकार की ईशभक्ति है। निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा समय पर फलीभूत होती है। तन-मन के द्वारा की गई सेवा अहंकार व अभिमान को चूर करती है। गुरु आश्रम, गुरुदेव व बड़े बुजुर्गों की सेवा से तन की पवित्रता व मन का शुद्धिकरण होता है साथ ही हृद्य गुरु व बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद मिलता है। गुरुवर स्वामी टेऊंरामजी महाराज भी गुरु की सेवा तन्मयता श्रद्धा भाव से किया करते थे। एक समय बड़ी भारी सत्संग सभा लगी हुई थी। दादा गुरुदेव स्वामी आसूरामजी महाराज के मुखारविन्द द्वारा हजारों श्रद्धालुजन सत्संग गंगा का रसपान कर रहे थे। सत्संग समाप्ति पर गुरुदेव दादा स्वामी आसूरामजी महाराज ने स्वामी टेऊँरामजी से कहा-किसी सेवादारी से कह दो कि हमारे जूते (चरण पादुका) ले आए। गुरुदेव आज्ञा शिरोधार्य कर किसी को भी न कहकर स्वयं स्वामी टेऊँराम जी, गुरुदेव जी की चरण पादुका मस्तक पर रखकर भरी सभा में गुरुदेव के पास लेकर आए। दादा गुरुदेव स्वामी आसूरामजी महाराज ने जब स्वामी टेऊँराम जी को चरण पादुका मस्तक पर लाते हुए देखा तो

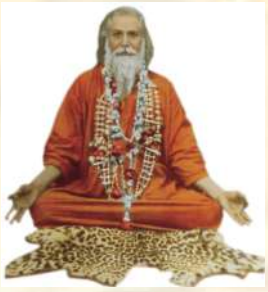

गद- गद हो गए। बड़े ही प्रेम भाव होकर हृदय से लगा लिया। टेऊँराम तुम धन्य धन्य हो। दादा गुरुदेव मन ही मन सोचने लगे। टेऊँराम के इतने हजारों शिष्य सेवक होते है फिर भी स्वयं भरी सभा में हमारे जूते अपने मस्तक पर रखकर लाए हैं। ऐसे शिष्य धन्य हैं। जिसके मन में गुरु के प्रति इतना समर्पण भाव है। इतनी निर्मानता, ऐसे शिष्य स्वयं का नाम तो उज्ज्वल करते हैं, साथ ही गुरु की यश-कीर्ति को भी बढ़ाते हैं। दादा गुरुदेव श्री स्वामी आसूरामजी महाराज ने स्वामी टेऊँराम का ऐसे स्नेहात्मक सेवा भाव देखा तो सहज ही हृदय से निकला आशीर्वाद, टेऊँराम तुम धन-धन हो। तुम्हारे माता-पिता भी धन-धन हैं, जो ऐसे महापुरुष पुत्र को जन्म दिया। तुम्हारी सदैव जय-जयकार होगी, यश-कीर्ति बढ़ेगी। सदैव अजर अमर रहोगे भक्त टेऊँराम, आज उन गुरुदेव के आशीर्वाद का फल है । सर्वत्र जय जयकार है

प्रेम प्रकाशी संत मोनूराम जी श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सावन मास- पावन प्रसंग

! भगवान शिव को है राम नाम प्रिय !

भगवान् शंकर का 'राम' नाम पर इतना स्नेह है कि वे मुर्दे की भस्म अपने शरीर पर लगाते हैं। कोई एक आदमी मर गया, लोग उसे श्मशान ले जा रहे थे और 'राम नाम सत् है' ऐसा उच्चारण कर रहे थे। भगवान शंकर ने देखा कि यह कोई भक्त है जो इसके प्रभाव से ले जाने वाले 'राम' नाम बोल रहे हैं। बड़ी अच्छी बात है, वे उनके साथ में हो गये। 'राम' नाम की ध्वनि सुने तो 'राम' नाम के प्रेमी साथ हो ही जाय। जैसे- पैसों की बात सुनकर पैसों के लोभी उधर खिंच जाते हैं, सोने की बात सुनते ही सोने के लोभी के मन में आती है कि हमें भी सोना मिले और गहना बनवायें, इसी प्रकार भगवान् शंकर का मन भी 'राम' नाम सुनकर उन लोगों की तरफ खिंच गया। अब लोगों ने मुर्दे को श्मशान में ले जाकर जला दिया और पीछे जब अपने-अपने घर लौटने लगे तो भगवान् शंकर ने सोचा 'क्या बात है? ये आदमी तो वे-के-वे ही हैं, परन्तु 'राम' नाम कोई लेता नहीं।' उनके मन में आया कि उस मुर्दे में ही करामात थी, उस कारण सब लोग 'राम' नाम ले रहे थे। वह मुर्दा कितना पवित्र होगा। भगवान् शंकर ने श्मशान में जाकर देखा, मुर्दा तो जलकर राख हो गया। इसलिये उन्होंने उस मुर्दे की भस्म अपने शरीर में लगा ली और वहाँ श्मशान में रहने लगे। अतः राख में 'रा' और मुर्दे में 'म' इस तरह 'राम' हो गया। 'राम' नाम उन्हें बहुत प्यारा लगता है। 'राम' नाम सुनकर वे खुश हो जाते हैं, प्रसन्न हो जाते हैं। इसलिये मुर्दे की राख अपने अंगों में लगाते है । ऐसे है देवाधिदेव महादेव । भोलेनाथ बाबा !

प्रेम प्रकाशी संत मोनूराम जी, श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

गलत तरीके से पैसा कमाना या दूसरों को दुःख देकर पैसा कमाना- ये भी एक तरह की हिंसा है ।

रोचक कहानी- **संत वचन**

'गुरु की महिमा, गुरु ही जाने'

एक संत के पास ३० सेवक रहते थे एक सेवक ने गुरुजी के आगे अरदास की महाराज जी मेरी बहन की शादी है तो आज एक महीना रह गया है तो मैं दस दिन के लिए वहां जाऊंगा कृपा करें आप भी साथ चले तो अच्छी बात है

गुरु जी ने कहा बेटा देखो टाइम बताएगा नहीं तो तेरे को तो हम जानें ही देंगे उस सेवक ने बीच-बीच में इशारा गुरु जी की तरफ किया कि गुरुजी कुछ ना कुछ मेरी मदद कर दे आखिर वह दिन नजदीक आ गया सेवक ने कहा गुरु जी कल सुबह जाऊंगा

गुरु जी ने कहा ठीक है बेटा सुबह हो गई जब सेवक जाने लगा तो गुरु जी ने उसे ५ किलो अनार दिए और कहा ले जा बेटा भगवान तेरी बहन की शादी खूब धूमधाम से करें दुनिया याद करें ऐसी शादी तो हमने कभी देखी ही नहीं और साथ में दो सेवक भेज दिये जाओ तुम शादी पूरी करके आ जाना

जब सेवक घर से निकले १०० किलोमीटर गए तो मन में आया जिसकी बहन की शादी थी वह सेवक से बोला गुरु जी को पता ही था कि मेरी बहन की शादी है और हमारे पास कुछ भी नहीं है फिर भी गुरु जी ने मेरी मदद नहीं की दो-तीन दिन के बाद वह अपने घर पहुंच गया उसका घर राजस्थान के रेतीले इलाके में था वहां कोई फसल नहीं होती थी वहां के राजा की लड़की बीमार हो गई वैद्य ने बताया इस लड़की को अनार के साथ यह दवाई दी जाएगी तो यह लड़की ठीक हो जाए

राजा ने मुनादी करवा रखी थी अगर किसी के पास अनार है तो राजाजी उसे बहुत ही इनाम देंगे इधर मुनादी वाले ने आवाज लगाई अगर किसी के पास अनार है तो राजा को जरूरत है जल्दी आ जाओ जब यह आवाज उन सेवकों के कानों में पड़ी वह सेवक उस मुनादी वाले के पास गए हमारे पास अनार है चलो राजा जी के पास।

राजाजी को अनार दिए गए अनार का जूस निकाला गया लड़की को दवाई दी गई लड़की ठीक-ठाक हो गई राजा जी ने पूछा तुम कहां से आए हो तो उसने सारी हकीकत बता दी राजा ने कहा ठीक है तुम्हारी बहन की शादी में करूंगा।

राजा जी ने हुकुम दिया ऐसी शादी होनी चाहिए कि लोग यह कहे कि यह राजा की लड़की की शादी है सब बारातियों को सोने चांदी गहने के उपहार दिए गए बारात की सेवा बहुत अच्छी हुई लड़की को बहुत सारा धन दिया गया लड़की के मां-बाप को बहुत ही जमीन जायदाद आलीशान मकान बहुत ही पैसे रुपए दिए गए लड़की भी राजी खुशी विदा होकर चली गई

अब सेवक सोच रहे हैं कि गुरु की महिमा गुरु ही जाने हम ना जाने क्या-क्या सोच रहे थे गुरु जी के बारे में गुरु जी के वचन थे जा बेटा तेरी बहन की शादी ऐसी होगी दुनिया देखेगी।

संत वचन हमेशा सच होते हैं

शिक्षा- संतों के वचन के अंदर ताकत होती है लेकिन हम नहीं समझते जो भी वह वचन निकालते हैं वह सिद्ध हो जाता है हमें संतों के वचनों के ऊपर अमल करना चाहिए और विश्वास करना चाहिए ना जाने संत मोज में आकर क्या दे दे रंक से राजा बना दे।

संकलित

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश आहार शुद्धि से व्यवहार शुद्ध होता है और तमोगुणवर्धक नाना प्रकार के माँस-मछलियाँ आदि जो अभक्ष्य पदार्थ हैं, जिनके आहार करने से अन्त: करण मलिन होता है, उन पदार्थों का कभी भी सेवन नहीं करना चाहिए।

सच्ची तीर्थ यात्रा

रामनारायणजी नाम के एक साधारण व्यापारी थे। राजस्थान के छोटे से शहर में वे एक साधारण-सी दूकान करते थे। उनकी पत्नी बड़ी श्रद्धालु तथा धार्मिक प्रवृत्ति की थी। उसका मन बहुत दिनों से चारों धामों की यात्रा करने तथा पुण्यस्थलों पर यथासाध्य कुछ दान करने का था। पर पति की आर्थिक स्थिति को देखकर वह कभी कुछ कहती नहीं थी।

एक वर्ष उनकी दूकान में पाँच-सात सौ रुपये की बचत हुई, तब उसने एक दिन पति से अपने मन की बात कही। पति ने प्रसन्न होकर सहानुभूति के साथ कहा'-सब मिलाकर लगभग दो हजार का खर्च है। अगले साल कुछ और कमाई हो जायगी, तब चले चलेंगे। तुम्हारी यह इच्छा बहुत ही उत्तम है।'

पत्नी ने कहा-'लगभग चार सौ रुपये तो दस वर्ष में मैंने बचा बटोरकर रखे हैं।' आखिर यह निश्चय हुआ कि 'होली के बाद चलना है। अभी छः महीने हैं। इस बीच विवाहों के मौसम में दूकान में भी कुछ आमदनी हो जायगी।' पत्नी प्रसन्न हो गयी।

आखिर फागुन तक सब मिलाकर सोलह सौ रुपये इकट्ठे हुए। चैत्र कृष्ण द्वितीया का मुहूर्त निश्चित हो गया। रामनारायण ने दुकान का काम कुछ समेट लिया, क्योंकि तीर्थयात्रा में जाने पर दूकान बन्द रखनी थी।

इसी बीच एक दिन गाँव में बाहरी बस्ती में आग लग गयी। गरीबों की झोंपड़ियाँ तो जलीं ही, छोटी-सी गोशाला के घास की वह बागर जल गयी, जो कल ही खुलने वाली थी। गोशाला की डेढ़ सौ गायों के खाद्य की भयानक समस्या आ गयी।

यह समाचार रामनारायणजी की धर्मभीरु करुणामयी पत्नी को मिला। घास के अभाव में गौओं को भूखा रहना पड़ेगा, इस विचार से उसका हृदय दहल गया।

उसने अपने पति रामनारायणजी से कहा-'अपनी तीर्थयात्रा या तो इस साल स्थगित कर दीजिये अथवा चारों धामों की न करके दो ही धामों की यात्रा कीजिये और सोलह सौ में से आधे आठ सौ रुपये की गायों के लिये घास खरीद दीजिये। घास के अभाव में गायें भूखी रहेंगी।'

रामनारायणजी ने समझाया-'वर्षों सेतुम्हारी तीर्थयात्रा की इच्छा है और बड़ी कोर कसर से-बड़ी कठिनाई से ये रुपये इकट्ठे हो गये हैं। फिर जुगाड़ होना कठिन है।' पर उसकी समझ में यह बात नहीं आयी।

उसने कहा-'तीर्थयात्रा ना होगी तो कोई बात नहीं। गाँव में इस समय कोई घास खरीद दे, ऐसा आदमी दीखता नहीं है। खुली बागर की घास समाप्त हो गयी थी। कल ही यह बागर खुलने वाली थी। मैंने पता लगाया है कि अमुक जाट के पास एक बागर घास है, और किसी के पास नहीं।

वह किसी को बेच देगा तो फिर तो घास मिलना ही कठिन हो जायगा। अतएव उस घास को खरीदकर गोशाला को दे दीजिये। तीर्थयात्रा में अपने को जो लाभ होता, वह न होगा तो कोई बात नहीं, हमारी गोमाता तो भूखों नहीं मरेंगी।'

रामनारायणजी ने पत्नी की बात मान ली, घास खरीद ली गयी। तीर्थयात्रा का विचार एक बार स्थगित सा हो गया। साढ़े आठ सौ में घास खरीदी गयी, साढ़े सात सौ रुपये बच रहे। इसी बीच में एक और चीज सामने आ गयी।

रामनारायणजी की पत्नी के पीहर के दूर रिश्ते में एक भतीजी थी। बहुत गरीब घर था। उसकी एक लड़की का विवाह होने वाला था। रुपयों की व्यवस्था नहीं हो पायी थी, पर लड़की का पिता प्रयत्न कर रहा था।

वह कलकत्ते में नौकरी करता था, वहाँ मालिकों से सहायता माँगने गया था। वहाँ अकस्मात् हैजा होकर उसका देहान्त हो गया। रामनारायणजी की पत्नी की भतीजी पर वज्रपात हो गया। पति की मृत्यु हो गयी और इधर जवान लड़की का विवाह रुकने की नौबत आ गयी। आगे डेढ़ साल विवाह का लग्न नहीं था। सयानी लड़की थी।

यह समाचार जब रामनारायणजी की पत्नी को मिला तो उसको बड़ी मार्मिक पीड़ा हुई। उसने सोचा, तीर्थयात्रा के लिये बचे हुए साढ़े सात सौ रुपयों में कन्या का विवाह हो जायगा। उसने रोते हुए अपने पति के सामने विचार प्रकट किये। रामनारायणजी का हृदय भी बड़ा कोमल था। उन्होंने पत्नी की बात का समर्थन किया।

दो महीने बाद विवाह की तिथि थी। रामनारायणजी और उनकी पत्नी दोनों उसके घर गये, उसे आश्वासन दिया और विवाह के मुहूर्त पर दोनों ने वहाँ जाकर अपने रुपयों से कन्या का विवाह कर दिया।

वहाँ से लौटने पर एक दिन रामनारायणजी की पत्नी को स्वप्न में भगवान् नारायण के दर्शन हुए। नारायण ने कहा-'तुम्हारी तीर्थयात्रा सफल हो गयी। तुमने गायों की रक्षा और विधवा अबला की कन्या के विवाह में रुपये लगा दिये। इससे तीर्थयात्रा का फल तो तुम्हें मिल ही गया। मेरी प्रसन्नता भी तुम पर बरस रही है। तुम दोनों पति-पत्नी का लौकिक और पारमार्थिक भविष्य सुधर गया।' उसने जगकर पति को सपना सुनाया। पति को भी ठीक वही सपना आया था। दोनों गद्गद हो गये।

भगवान् की कृपा से उनका कारोबार बढ़ा, बड़ी सम्पत्ति हो गयी। तीर्थयात्रा भी सम्पन्न हुई। पर उनका जीवन फिर सदाचार, भगवद्भक्ति तथा गरीबों की सेवारूप भगवत्पूजा में ही बीता। सच्ची तीर्थयात्रा हो गयी।

संकलित

गुरु और भगवान में एक अंतर है

एक आदमी के घर भगवान और गुरु दोनो पहुंच गये।
वह बाहर आया और चरणों में गिरने लगा।
वह भगवान के चरणों में गिरा तो भगवान बोले रुको रुको पहले गुरु के चरणों में जाओ। वह दौड़ कर गुरु के चरणों में गया।
गुरु बोले- मैं भगवान को लाया हूँ, पहले भगवान के चरणों में जाओ। वह भगवान के चरणों में गया तो भगवान बोले- इस भगवान को गुरु ही लाया है न, गुरु ने ही बताया है न, तो पहले गुरु के चरणों में जाओ।
फिर वह गुरु के चरणों में गया। गुरु बोले- नहीं नहीं मैंने तो तुम्हें बताया ही है न, लेकिन तुमको बनाया किसने ?
भगवान ने ही तो बनाया है न। इसलिये पहले भगवान के चरणों में जाओ। वो फिर वह भगवान के चरणों में गया।
भगवान बोले- रुको मैंने तुम्हें बनाया, यह सब ठीक है। तुम मेरे चरणों में आ गये हो। लेकिन मेरे यहाँ न्याय की पद्धति है। अगर तुमने अच्छा किया है, अच्छे कर्म किये हैं, तो तुमको स्वर्ग मिलेगा। मुक्ति मिलेगी। अच्छा जन्म मिलेगा। अच्छी योनि मिलेगी। लेकिन अगर तुम बुरे कर्म करके आए हो, तो मेरे यहाँ दंड का प्रावधान भी है।
दंड मिलेगा। चौरासी लाख योनियों में भटकाए जाओगे। फिर अटकोगे, फिर तुम्हारी आत्मा को कष्ट होगा।
फिर नरक मिलेगा, और अटक जाओगे।
लेकिन यह गुरु है ना, यह बहुत भोला है....
इसके पास, इसके चरणों में पहले चले गये....
तो तुम जैसे भी हो, जिस तरह से भी हो.....
यह तुम्हें गले लगा लेगा। और तुमको शुद्ध करके मेरे चरणों में रख जायेगा.....जहाँ ईनाम ही ईनाम है।
यही कारण है कि गुरु कभी किसी को भगाता नहीं.....
गुरु निखारता है.....जो भी मिलता है...उसको गले लगाता है... उसको अच्छा करता है...और भगवान के चरणों में भेज देता है..

सभी गुरुजनों को सादर प्रणाम.....

सत्संग का हमारे जीवन में क्या फर्क पड़ता है ?

एक आदमी रोज सत्संग सुनने आता था, वह पूरी तरह से बहरा था, उसके कान थे लेकिन वे नाड़ियों से जुड़े नहीं थे, वह एक शब्द भी नहीं सुन सकता था, एक दिन कुछ लोग संत से कहते हैं, ''बाबाजी वह जो वृद्ध आदमी बैठते हैं वे कथा सुनते सुनते हंसते हैं, लेकिन वह बहरे हैं, वे दो बार हंसते हैं एक बार तो जब बाकी लोग हंसते हैं और दूसरा जब वे अनुमान से कुछ समझकर हंसते हैं, संत जी ने सोचा वह बहरा है तो कथा सुनने क्यों आता है, संत जी ने देखा कि वह व्यक्ति रोज समय पर सत्संग में आता था, और घंटों बैठा रहता था, कभी उठकर नहीं जाता था, यह देख संत जी को और अधिक कौतूहल हुआ, उन्होंने सोचा, ''अगर वह बहरा है तो कथा क्यों सुनता है, यदि वह कथा नहीं सुन सकता तो उसे रस नहीं आयेगा, और फिर वह यहाँ क्यों बैठेगा, संत जी ने उस वृद्ध को बुलाया और उसके कान के पास ऊंची आवाज में पूछा क्या तुम्हें मेरी आवाज सुनाई देती है, वृद्ध ने कहा क्या बोले महाराज, संत जी ने आवाज और ऊंची कर पूछा- जो मैं कह रहा हूँ, क्या वह सुनाई पड़ता है, वृद्ध ने वही उत्तर दिया-क्या बोले महाराज, अब संत जी समझ गये कि वह व्यक्ति वास्तव में पूरी तरह से बहरा है, संत जी ने सेवक से कागज और कलम मंगवाया, और फिर लिखकर पूछा तुम रोज यहाँ क्यों आते हो जब तुम सुन नहीं सकते, वृद्ध ने लिखा बाबाजी, मैं सुन तो नहीं सकता, लेकिन यह तो समझता हूँ कि जब कोई महापुरुष बोलते हैं तो उनका शब्द पहले परमात्मा में डुबकी मारता है, वे जो बोलते हैं वह मेरी आत्मा को छूता है, भले ही मैं उसे सुन नहीं पाता, इसी कारण मैं यहाँ आता हूँ, वृद्ध ने आगे लिखा ''दूसरी बात -जो पुण्यात्मा लोग आपकी अमृतवाणी सुनने के लिये आते हैं उनके बीच बैठने का भी मुझे पुण्य मिलता है, इसी कारण मैं सत्संग में आता हूँ, मुझे तो आपका आशीर्वाद और वाणी का प्रभाव अपने शरीर में महसूस होता है, संत जी ने देखा कि यह वृद्ध व्यक्ति तो गहरी समझ वाला और आध्यात्मिक दृष्टि से सम्पन्न है, उन्होंने वृद्ध से पूछा तुम रोज सत्संग में समय पर क्यों आते हो और हमेशा सामने बैठते हो, वृद्ध ने उत्तर दिया बाबाजी मैं परिवार में सबसे बडा हूँ, और जब बड़े लोग कुछ करते हैं तो छोटे भी वैसा ही करते हैं, जब मैंने सत्संग में आना शुरु किया तो मेरा बड़ा बेटा भी यहाँ आने लगा, शुरू में मैं उसे बहाने से लाता था, लेकिन फिर वह अपनी पत्नी को लाया और पत्नी ने बच्चों को लाया, अब पूरा परिवार यहाँ आता है, मुझे लगता है कि इससे घर में संस्कार आ रहे हैं, संत जी ने उसकी बातों को ध्यान से सुना और समझा, उन्होंने कहा तुम्हें हंसने का पूरा अधिकार है, और तुम्हारा यह कार्य भी बहुत पुण्यकारी है, तुम्हारी उपस्थिति से तुम्हारे परिवार को भी लाभ मिल रहा है, सत्संग और ब्रह्मचर्चा का पुण्य इतना महान होता है कि भले ही कोई सुन ना पाए, केवल वहाँ उपस्थित होने मात्र से वह व्यक्ति जीवन के पाप और ताप से मुक्त हो जाता है, अगर उसे समझ न आये तो भी वह व्यक्ति धीरे धीरे आत्मज्ञान के रास्ते पर चलता है, संत जी ने बताया कि सत्संग और ईश्वर की भक्ति का प्रभाव हर किसी पर होता है, चाहे वह सुनने में सक्षम हो या नहीं, यह एक ऐसा पुण्य है जो जन्मों तक लाभ देता है, इसीलिये यह जरूरी नहीं कि हमें हर शब्द सुनने की आवश्यकता हो, बल्कि केवल हमें वहाँ उपस्थित रहकर उस दिव्य ऊर्जा और वाणी का अनुभव करना चाहिये, इससे यह शिक्षा मिलती है कि सत्संग में केवल भाग लेना ही पर्याप्त है, चाहे हमें कुछ समझ न आए, ईश्वर की वाणी का प्रभाव एकाग्रता और मनन से मनुष्य के जीवन में शांति और सुख लेकर आता है,

संकलित

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

समय पाकर सभी जड़-चेतन जितने भी जीव हैं वे प्रकट होते हैं और छिप जाते हैं। यह क्रम न जाने कब से आरम्भ हुआ और कब तक चलेगा, यह कोई नहीं जान सकता।

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का वर्सी महोत्सव सम्पन्न

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य, मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का ८३वाँ वर्सी उत्सव प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरापुर दरबार (डिब्) जयपुर सहित समूची देश-दुनिया के प्रेम प्रकाश आश्रमों में बड़े ही श्रद्धाभाव के साथ २८ मई से १ जून २०२५ तक मनाया गया. इस अवसर पर पंचदिवसीय श्रीमद्भगवत्गीता व प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठों का पारायण हुआ. विशेष सत्संग सभाओं में पूज्य संत मण्डल, विद्वानों, कवियों, भजनीकों ने आचार्यश्री के मंगलमय प्रेरक जीवन दर्शन पर सत्संग प्रवचनों भजनों कविताओं के माध्यम से प्रकाश डाला. अनेक आश्रमों पर अंतिम दिवस १ जून को आम भण्डारे हुए.

श्री अमरापुर दरबार के अलावा प्रमुख कार्यक्रम आदर्श नगर अजमेर स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम में पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ. इस अवसर पर अनेक परोपकारी कार्य भी किये गये. कोटा आश्रम पर संत श्यामलाल के सानिध्य में वर्सी महोत्सव के उपलक्ष में अनेक परमार्थी सेवा कार्य भी किये गये. सिंधी कॉलोनी स्थित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम मुरैना में संत प्रतापलाल के सानिध्य में प्रभातफेरी का आयोजन हुआ एवं बाल मण्डली द्वारा भव्य रंगारंग कार्यक्रमों का मंचन हुआ। श्री अमरापुर स्थान जयपुर पर प्रातः काल की ब्रह्म वेला में चौथ पर्व पर ५.३० बजे मंगल दर्शन के साथ भक्तों द्वारा एक पुष्प गुरु चरणों में अर्पित कर मनोकामना मांगी गई। ५.५० से ६.३० तक ४० मिनट हवन यज्ञ अनुष्ठान तत्पश्चात नित्य नियम प्रार्थना, संत महात्माओं द्वारा आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की महिमा का गुणगान, ग्रंथ गीता के पाठों के भोग परायण, सामूहिक चालीसा का पाठ, सतनाम साखी महामंत्र का जाप, महाप्रसादी के भोग के साथ विशाल आम भंडारे का आयोजन हुआ । संतो द्वारा अपने प्रवचन में बताया गया कि आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को बाल्यकाल से ही सुंदर संस्कार मिले हुए थे, जब भी गुरुदेव बच्चों के साथ सिंधु नदी के तट पर खेलने जाते तो वहां भी सभी के साथ बैठ भगवान के नाम का सुमिरन करते । आज के युग के माता पिता को बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए उनका नाम भगवान के नाम पर रखना चाहिए जैसे राम, श्याम, माधव, गोविंद आदि। इससे जितने बार हम अपने बच्चे को पुकारेंगे उतनी बार प्रभु के नाम का सुमिरन होगा । संतो ने आगे बताया कि आध्यात्मिक ज्ञान का अनमोल खजाना है श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहिब। श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ की अध्यात्म वाणी में भजन, दोहे, पद, छंद, श्लोक आदि का समावेश है जिसका नित्य प्रतिदिन अध्ययन करने से शांति का अनुभव होता है। श्री अमरापुर स्थान जयपुर के बाहर निरंतर चल रहे अन्न क्षेत्र में राहगीरों को पुलाव के साथ साथ शर्बत और ठंडी छाछ वितरित की गई ।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश प्रेम का मार्ग सभी मार्गो से सर्वथा भिन्न और विलक्षण है ।

समाचार डायरी

स्वामी टेऊँराम महाराज का छठी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया

जयपुर । श्री अमरापुर स्थान जयपुर सहित देश विदेश स्थित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर पूज्य आचार्यश्री का छठी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया । श्री अमरापुर स्थान जयपुर पर इस अवसर पर मनोहारी झूला झांकी सजायी गयी थी। जिसमें बाबा टेऊँराम महाराज को झुलाया गया । संतों द्वारा अवसर पर बधाई गीत गाकर सभी श्रद्धालुओं को बधाई दी गयी। जयपुर पर अक्षय तृतीया का पावन पर्व मनाया गया । इस अवसर पर प्रातः काल अनेक मिष्ठानों का भोग एवं सायंकाल को खीर पुड़ी का भोग आचार्य श्री के समक्ष लगाया गया ।

राजनांदगांव के गुरुप्रेमी श्री किशनचंद जी द्वारा रचित भजन पुस्तक का विमोचन पूज्य महाराजश्री द्वारा किया गया।

धमतरी में चालीसा महोत्सव के 24वें दिन पूज्य महाराजश्री द्वारा ऑनलाइन सत्संग वरखा

सिंध के मुकुट मणि महापुरुष आचार्य प्रवर सतगुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज के चालीसा महोत्सव के मध्य २४ वाँ दिन धमतरी वासियों के लिए बहुत ही खास रहा । यहां के भक्तों के प्रबल सौभाग्य से श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के वर्तमान अध्यक्ष गुरुदेव सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का हिमाचल प्रदेश धर्मशाला से लाइव सत्संग का आयोजन हुआ । पूज्य महाराजश्री ने सत्संग में सर्वप्रथम गोबिंद जय जय गोपाल जय जय श्री राधारमण हरि गोविन्द जय जय की धुनि लगाते हुए ईश्वर के नाम से भक्तों के मुख-कान-मन को पवित्र किया एवं बताया कि आचार्यश्री के पावन चालीहा साहब के पवित्र दिन चल रहे हैं । धर्म की स्थापना-अधर्म के नाश के लिए ईश्वर अनन्त रूप में अवतार लेते हैं नित अवतार निमित्त अवतार कारक अवतार इसमें ईश्वर सन्त महात्माओं के रूप में नित अवतारी रूप में जगह जगह समय समय पर जगत के कल्याण के लिए अवतार लेते हैं और जीवों को धर्म की राह बताते हैं इसी नित अवतारी रूप में आचार्यश्री का अवतरण अविभाजित भारत के सिंध प्रान्त में ग्राम खण्डू में तारीख चौथी मास आषाढ़ दिन शनिवार को संत सेवी माता कृष्णा पिता चेलाराम के आंगन में हुआ, धन्य हैं माता कृष्णा जिन्होंने मन में यह आशा रखकर कि मेरी गोद में ईश्वर संतों के रूप में अवतार लें इस हेतु चालीसा का व्रत किया जिससे प्रसन्न हो चार साधू उनके घर आए जिनकी उन्होंने दिल से सेवा की जिससे प्रसन्न होकर उन्होंने आशीर्वाद दिया सेवा जे बदले तोखे मेवा महान मिलन्दा गोदीअ में तुहिंजे देवी लक्ष्मण ऐं राम ईन्दा । ईश्वर सेवा से एवम् भक्ति भाव से शीघ्र प्रसन्न होते हैं । माता कृष्णा देवी के भक्ति भाव एवं सेवा भाव से भगवान भोलेनाथ ने शिव स्वरूप आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के रूप में अवतार लिया तब आकाशवाणी हुई जिसे सुन माता कृष्णा का हृदय खुशी से आनन्द से भर गया' ऐसे अवतारी महापुरुष जिनका उद्देश्य जगत कल्याण है उनसे हम प्रार्थना करें कि हमारा मन बेकार के विचारों ख्यालों को बेकार के विषयों को छोड़कर गुरुबाबा के द्वारा दिए गए अनमोल नाम के जाप में मगन रहे उनके ही सिमरन एवं चिन्तन की मन में लगन रहे जिससे हम अपने तन-मन की सुध-बुध भूल जाएं ऐसे हमें गुरुबाबा के नाम के प्रेम का नशा चढ़ जाए एवं नाम की शक्ति से उस अपरंपार सुख को प्राप्त कर जीवन को सफल बना सकें । गुरु बाबा से उनके चालीहा महोत्सव में यही प्रार्थना कर अपना लोक सुखी कर परलोक के सुख की भी राह आसान करें ।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश साक्षी चेतन अगामी, अनामी, न दास न स्वामी है। वह तेरा निज स्वरूप है।

चालीहा भजन-चालीहा बाबा टेऊँराम का

खण्डू वाले का-2 बोलो जयकारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का
सत्गुरू प्यारे का-2 बोलो जयकारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का
टेऊँराम का मेरे सुख धाम का, सत्गुरू प्यारे का-2 बोलो जयकारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का,
जयपुर वाले का बोलो जयकारा , चालीहा बाबा टेऊँराम का।

1. साँई के दिवाने आऐ किस्मत बनाने, झूम-झूम नाचे गाऐं मस्त परवाने
साँई के दिवाने आऐ किस्मत....
करदो नजरें-2, करम का ईशारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का
खण्डू वाले का, बोलो जयकारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का
टेऊँराम का मेरे सुख धाम का, सत्गुरू प्यारे का बोलो जयकारा
चालीहा बाबा टेऊँराम का-2, जयपुर वाले का बोलो जयकारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का।

2. सतनाम साखी बोलो, सारे रल मिल के, झूमो नाचो खुशियाँ मनाओ सारे दिल से,
सतनाम साखी बोलो सारे रल.....
छाया आन्नद का-2, गजब नजारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का
खण्डू वाले का बोलो जयकारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का , टेऊँराम का मेरे, सुख धाम का
सत्गुरू प्यारे का बोलो जयकारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का,
जयपुर वाले का बोलो जयकारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का।

3. दर्शन को चलके आऐ साँई के दिवाने, मस्ती में झूमें गाऐं खूब तराने,
दर्शन को चलके आऐ साँई के....
देखा मस्ती का-2, अजब नजारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का
खण्डू वाले का बोलो जयकारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का
टेऊँराम का मेरे सुख धाम का, सत्गुरू प्यारे का, बोलो जयकारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का,
जयपुर वाले का, बोलो जयकारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का।

4. खण्डू वाले बाबा की, शान निराली, 'वधवा' के दोनो जहानों का वाली
खण्डू वाले बाबा की शान निराली...
अमरापुर दर-2, बार हमारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का
खण्डू वाले का बोलो जयकारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का
टेऊँराम का मेरे सुख धाम का, सत्गुरू प्यारे का बोलो जयकारा, चालीहा बाबा टेऊँराम का
जयपुर वाले का बोलो जयकारा, चालीहा, बाबा टेऊँराम का ॥

प्रेम प्रकाशी दास हरकेश वधवा,
समालखा मण्डी (हरियाणा)

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

आप चाहे महान शिक्षाशास्त्री बनें, हजारों पुस्तकें पढ़ें परन्तु प्रभु के प्रेम व भक्ति के बिना आपका ज्ञान किसी काम का नहीं है।

अमरापुर गमन

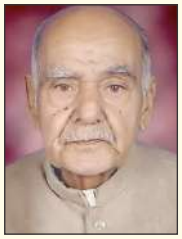

श्री रामचन्द्र आहूजा

कोटा । श्री रामचन्द्र आहूजा पुत्र अमरापुरवासी श्री लक्ष्मणदास आहूजा, ८६ वर्ष की आयु पूर्ण कर दिनांक १० जुलाई २०२५ को इस नश्वर देह का परित्याग कर श्री अमरापुर धाम सिधारे ।

नेत्रदानी श्रीमती वंदना रामचंदानी

धामनोद। नेत्रदानी श्रीमती वंदना रामचंदानी (प्रेम प्रकाशी) दिनांक २२ जनवरी २०२५ को इस सांसारिक देह का परित्याग कर श्री अमरापुर धाम सिधारी। आप इन्दौर मेले के दौरान प्रतिवर्ष परिवार सहित सेवा में तल्लीन रहती थी।

श्रीमती दिव्या छाबड़ा

इन्दौर। प्रेम प्रकाश आश्रम इन्दौर के सेवाधारी श्री जगदीश छाबड़ा की धर्मपत्नि श्रीमती दिव्या (गीता) छाबड़ा ५६ वर्ष की आयु में दिनांक ६ जुलाई २०२५ को पूज्य आचार्यश्री के श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी । आप प्रेम प्रकाश महिला मंडल की सदस्य होते हुए श्रीदरबार में नित्य ही सेवा में लगी रहती थी ।

श्रीमती कौशल्यादेवी ठकुरेल

इन्दौर । श्री प्रेम प्रकाश आश्रम इन्दौर के नित्य प्रति सेवाधारी एवं पूज्य गुरुजनों के प्रिय श्री राजू ठकुरेल जी की पूज्य माता श्रीमती कौशल्यादेवी ठकुरेल जी ८८ वर्ष की आयु में दिनांक ३० जून २०२५ को श्री गुरूचरणारविंद में श्री अमरापुर धाम सिधारी । आप सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के समय से ही पंथ से जुड़ी रही और उन्हीं के उपदेश से जीवन पर्यन्त सत्संग और नाम जप में अनवरत लगी रही ।

श्रीमती मोहिनी खत्री

मुरेना। श्रीमती मोहिनी खत्री धर्मपत्नि श्री वासुदेव खत्री, आयु ६५ वर्ष दिनांक १३ मई २०२५ को अमृतवेले इस सांसारिक देह का परित्याग कर पूज्य श्रीगुरु चरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी । आपका पूरा परिवार पूज्य गुरुजनों की सेवा में सेवारत रहता है । अमरापुरवासी श्रीमती जीवणीदेवी जो कि पूज्य गुरु महाराज जी के मेलों में ध्वजा(झंडे) की सेवा किया करती थी आप उनकी बहू थी ।

श्री दिलीप सिंधानी

पलवल। सरल हृदय, शांत चित्त, गुरुजनों के प्रिय श्री दिलीप सिंधानी सुपुत्र अमरापुरवासी श्री देशराज सिंधानी, ५२ वर्ष की आयु में दिनांक १६ जून २०२५ को इस सांसारिक देह का परित्याग कर आचार्यश्री के पूज्य गुरु चरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे । आप श्री प्रेम प्रकाश आश्रम पलवल व श्री अमरापुर स्थान जयपुर के सेवा कार्यो में जुड़े हुए थे । बालपन से लेकर जीवन पर्यन्त श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के कार्यकर्ता के रूप में सेवारत थे । २०२५ में प्रयागराज महाकुम्भ में श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की छावनी में दिन-रात कार्यकर्ताओं के साथ आप सेवा में लगे हुए थे । आपका पूरा परिवार भी पूज्य गुरुजनों की सेवा में सेवारत है ।

श्री सुरेश टहिलरामानी

मुंबई। श्री सुरेश टहिलरामानी, आयु ७१ वर्ष दिनांक १७ जून २०२५ को इस नश्वर देह का परित्याग कर पूज्य श्रीगुरु चरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे ।

श्री सुदामा बबानी

लाइबेरिया। श्री सुदामा बबानी पुत्र अमरापुरवासी किशनचन्द बबानी, आयु ७८ वर्ष, दिनांक २२ मई २०२५ को इस नश्वर देह का परित्याग कर पूज्य श्रीगुरु चरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे ।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

जो कोई भी अपनी हस्ती को मिटा देता है,
वह ही बड़ों की परम्परा को संभाल सकता है ।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

27–28–29 जुलाई 2025	दिल्ली
30–31 जुलाई, 1 अगस्त 2025	प्रयागराज

व्रत–पर्व–उत्सव

24 जुलाई 2025– गुरुवार– अमावस्या
26 जुलाई 2025– शनिवार– चन्द्र दर्शन
29 जुलाई 2025– मंगलवार– नागपंचमी
30 जुलाई 2025– बुधवार– सद्गुरु सर्वानन्द पुण्यतिथि
30 जुलाई 2025– बुधवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
01 अगस्त 2025–शुक्रवार– सद्गुरु सर्वानन्द जल समाधि दिवस (हरिद्वार)
05 अगस्त 2025– मंगलवार– एकादशी
09 अगस्त 2025–शनिवार– रक्षाबंधन, नारियल पूर्णिमा
09 अगस्त 2025–शनिवार– सद्गुरु शांति प्रकाश जयंती
11 अगस्त 2025–सोमवार– सद्गुरु शांति प्रकाश पुण्यतिथि
12 अगस्त 2025–मंगलवार–टींजड़ी पर्व, गणेश चर्तुर्थी
15 अगस्त 2025–शुक्रवार– स्वतंत्रता दिवस, थदिड़ी
16 अगस्त 2025–शनिवार– श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
19 अगस्त 2025–मंगलवार– एकादशी
19 अगस्त 2025–मंगलवार– सद्गुरु हरिदासराम पुण्यतिथि
23 अगस्त 2025– शनिवार– अमावस्या
25 अगस्त 2025– सोमवार– चन्द्र दर्शन
25 अगस्त 2025–सोमवार– झूलेलाल चालीहा समापन,
27 अगस्त 2025–बुधवार– श्री गणेश चतुर्थी
29 अगस्त 2025– शुक्रवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
31 अगस्त 2025–रविवार– श्री राधाष्टमी, सगड़ा बंधण

श्रीमती सनमुख देवी धामेजा

ग्वालियर। प्रेम प्रकाश आश्रम ग्वालियर के सेवाधारी प्रदीप धामेजा की माता श्रीमती सनमुख देवी धामेजा धर्मपत्नि अमरापुरवासी श्री रोचामल धामेजा दिनांक ०६ जुलाई २०२५ को इस नश्वर देह का परित्याग कर श्री अमरापुर धाम सिधारी।

श्री लखमीचंद रोहिरा

ग्वालियर। श्री लखमीचंद रोहिरा दिनांक १३ जून २०२५ को इस भौतिक शरीर का परित्याग कर श्री अमरापुर धाम सिधारे।

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की गई।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश जिन महापुरूषों की वाणी वेद के समान है, उनकी सेवा करनी चाहिए। जब वे महात्मा सेवा करने पर प्रसन्न हो जाते हैं तब जिज्ञासु को आत्मज्ञान देकर अमर बनाते हैं।

43
डाक पंजीकृत संख्या ग्वालियर/40020293/2020-22
रजि० समाचार पत्र-रजि० नं० MP/Hindi/2008/25627

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

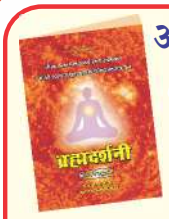

'ब्रह्मदर्शनी'

सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं मई २०२५ अंक खां अगिते-

।। दशपदी - 18 ।।

उमंग उमंग हरि के गुन गावे, प्रेम न हृदय माहिं समावे।
भोग विषय की करे न आसा, लोभ मोह मद काटे फासा।
देश काल कछु वस्तु न देखे, हरि का एक प्रेम ही पेखे।
हरि गुण गावत नीर बहावे, देह गेह की सुधि बिसरावे।
हरि प्रेम है जीवन जाँको, कह टेऊँ लख प्रेमी तांको।। 5 ।।

ईश्वर-प्रेमीअ जो वर्णनु कंदे सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराजनि चवनि था, 'जेको उमंग ऐं उत्साह सां हरीअ जा, प्रभूअ जा गुण गाए थो, जंहिंजे हृदय में ईश्वर लाइ अथाहु प्रेमु आहे, जेको संदुसि हृदय में मापी नथो सघे; जेको विषयनि जे भोग जी आशा कोन थो करे; जंहिं लोभ, मोह, मद आदि विकारनि जे बंधन खे कटे छड्यो आहे; जेको कंहिं बि स्थान ते भौतिक पदार्थनि खे कोन थो डिसे, मोह में नथो फासे; जेको सिर्फु ईश्वर जो प्रेमु ई डिसे थो; जेको प्रभूअ जा गुण गाईंदे नेणनि मां नीरु वहाईंदो रहे थे; प्रभु प्रेम में जेको, शरीर जी सुधि भुलाए थो छदे' जंहिंजो जीवनु भगवान जो प्रेमु ई आहे, स्वामी जनि चवनि था त "तंहिंखे प्रेमी, ईश्वर-प्रेमी' समुझणु घुरिजे. "

संसार में बिनि प्रकारनि जो प्रेमु थिए थो- हिकु भौतिक या लौकिक प्रेमु ऐं बियो अलौकिक प्रेमु. लौकिक प्रेमु हिन लोक में रहंदड़ माण्हुनि जो हिक बिए सां प्रेमु आहे. स्त्री-पुरुष, पती-पत्नीअ, माता-पिता, भाउ-भेण आदि सां हूंदडु प्रेमु लौकिक प्रेमु आहे. बियो अलौकिक या रूहानी प्रेमु आहे, जेको परमेश्वर सां कयो वेंदो आहे. कंहिं भक्त या मनुष जो परमेश्वर सां प्रेमु अलौकिक प्रेमु आहे, आत्मिक प्रेमु आहे. अध्यात्म जे खेतर में इन प्रेम जो महत्वु आहे. प्रेमु ईश्वर जी देन आहे. प्रेमु मानूं समर्पणु, ईश्वर खे पाणु अर्पणु करे छडणु. ईश्वर सां कयल प्रेम खे ई 'भगिती' चयो वेंदो आहे. भगिती प्रेम जी कला आहे. सभिनी भक्तनि परमेश्वर सां ई प्रेमु कयो आहे. अनेक संत-कवियुनि ईश्वर सां ई एकनिष्ठ भाव सां प्रेमु कयो आहे. उन्हनि प्रेमियुनि जे अंदर में हिकिड़ो परमात्मा ई वेठलु हूंदो आहे. परमात्मा जी प्रतिमा, मूर्ती हुननि पंहिंजे अंतःकरण में मज़बूतीअ सां, पकी, सोघी विहारियल हूंदी आहे. परमेश्वरु ई हुननि लाइ सभु कुझु हूंदो आहे. ईश्वर-प्रेमु ई हुननि जो जीवनु, हुननि जो साहु हूंदो आहे. सचो प्रेमी ईश्वर में समायलु हूंदो आहे ऐं ईश्वरु प्रेमीअ में. कबीरदास जे शब्दनि में-

नयनों की करी कोठरी, पुतरी पलँग बिछाय।
पलकों की चिक डारिकै, पिय को लिया रिझाय।। (हलदंडु)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : संतोष पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, 401-झूलेलाल अपार्टमेंट, कृष्णा एन्क्लेव,समाधिया कॉलोनी,तारागंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 से प्रकाशित किया गया।
कार्यालय: प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
सम्पादक : प्रहलाद सबनानी
प्रबन्ध सम्पादक : शंकरलाल सबनानी

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

– व्यवस्थापक

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें-

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढ़वे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर 474001 (म.प्र.)